भारत की अस्मिता को नेस्तनाबूत करने का विदेशी षडयन्त्र !

सेवाभावी हिन्दू संगठन के रूप में सुप्रतिष्ठित विहिप अमेरिका

भूटान में हिन्दुओं की दुर्दशा; कुम्भकर्णी नींद में भारत सरकार!

वार्षिक ₹ 200 ॐ मूल्य ₹ 10

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

जनवरी (01-15), 2012

# हिन्दू विश्व

(बाएं से) सर्वश्री एस. वेदान्तम् (निवर्तमान कार्याध्यक्ष), डॉ. प्रवीण तोगड़िया (नवनिर्वाचित अ. कार्याध्यक्ष), राघव रेड्डी (नवनिर्वाचित अ. अध्यक्ष), अशोकजी सिंहल (निवर्तमान अध्यक्ष) तथा अशोकराव चौगुले (अध्यक्ष-विदेश) व के.वी. मदनन (नि.के. अध्यक्ष-डॉ. तोगड़िया के पीछे)

## श्री अशोकजी सिंहल ने अध्यक्ष-पद त्यागा, राघव रेड्डी विहिप के नए अध्यक्ष व डॉ. तोगड़िया कार्याध्यक्ष निर्वाचित

## मंगलौर (कर्नाटक) की जनसभा में प्रस्तावित साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा अधिनियम-२०११ को वापिस लेने की मांग

**केन्द्रीय प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति बैठक**
**हिन्दू सांस्कारिक केन्द्रम्, पावाकुलम् टेम्पल, कलूर, कोच्चि (केरल) 16, 17, 18 दिसम्बर, 2011**

# श्री अशोकजी सिंहल ने अध्यक्ष-पद त्यागा, राघव रेड्डी विहिप के नए अध्यक्ष व डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया कार्याध्यक्ष निर्वाचित

कोच्चि (केरल), 18 दिसम्बर। श्री राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन के 77वें संघर्ष के नायक श्री अशोकजी सिंहल ने विहिप को युवा नेतृत्व प्रदान करने के लिए विहिप–अध्यक्ष पद को त्याग कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। विहिप–केन्द्रीय प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति बैठक के अन्तिम दिन राघव रेड्डी को विहिप का अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया। सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं विहिप के पूर्व केन्द्रीय कोषाध्यक्ष स्व. जी. पुल्ला रेड्डी के सुपुत्र श्री रेड्डी वर्तमान मे विहिप के केन्द्रीय कोषाध्यक्ष हैं। नवनिर्वाचित अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया ने नव ऊर्जावान अध्यक्ष एवं 'मिष्टान्न पुरुष' श्री राघव रेड्डी का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि विहिप की नवीन कार्यसमिति सम्पूर्ण हिन्दू संरक्षण और सामाजिक धार्मिक सेवा कार्यों के साथ ही धर्मान्तरण–गतिविधियों के विरुद्ध लोकतांत्रिक प्रतिरोध के लिए प्रतिबद्ध रहेगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सामाजिक व राजनीतिक शक्ति के रूप में हिन्दुत्व का प्रकटीकरण होगा।

ज्ञात हो श्री अशोक जी सिंहल 1998 में विहिप के कार्याध्यक्ष बने थे और उसके बाद 2005 में वे अध्यक्ष बने। पिछले वर्ष उन्हें तीसरी बार विहिप का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था। क्रमशः महामंत्री, कार्याध्यक्ष व अध्यक्ष के रूप में श्री सिंहल का कार्यकाल अनेक ऐतिहासिक घटनाओं व विहिप के चरमोत्कर्ष के लिए याद किया जायेगा। श्री अशोकजी सिंहल व निवर्तमान कार्याध्यक्ष एस. वेदान्तम् मार्गदर्शक के रूप में संगठन को अपनी सेवायें देते रहेंगे। **अशोकराव चौगुले (मुम्बई) विहिप के अध्यक्ष (विदेश) व चम्पतराय अंतरराष्ट्रीय महासचिव होंगे।**

**पारित प्रस्ताव**

## केरल में हिन्दुओं की दुर्दशा समाप्त करने के लिए तत्काल ठोस कदम उठाने की मांग

केरल में हिन्दुओं की दशा इस समय बहुत ही खराब है। राज्य में उनकी संख्या 50 प्रतिशत के करीब रह गयी है और यह संख्या लगातार तेजी से घट रही है। जनसंख्या घटने का प्रमुख कारण ईसाइयों द्वारा सुनियोजित तरीके से और मुसलमानों द्वारा जबरदस्ती किया जाने वाला उनका मतान्तरण है। इस सबके पीछे मूल साजिश एक ही है—जैसे भी हो सके दूसरे धर्मों द्वारा हिन्दुओं के धर्मिक अधिकारों में सेंध लगाना। मजेदार बात यह है कि ईसाइयों तथा मुसलमानों को यह गलतफहमी है कि वे संवैधानिक प्रावधानों के तहत ही ऐसा कर सकते हैं।

एक भावुक क्षण

इस संबंध में केरल के वामपंथी भी प्रभावी तरीके से अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। केरल की हिन्दू जनसंख्या में उनका प्रभाव काफी गहरा है। किन्तु वामपंथियों का प्रयास है कि हिन्दू अपनी संस्कृति, परम्पराओं तथा पूजा पद्धति आदि को त्यागकर भौतिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जिएं। हिन्दू जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है–अध्यात्म। यदि यही समाप्त हो गया तो हिन्दू का तो सब कुछ समाप्त जाएगा। इसलिए केरल में हिन्दू लगातार एक कमजोर समाज बनते जा रहे हैं।

केरल में हिन्दू इस समय दूसरे दर्जे के नागरिक हैं। यहां के राजनैतिक परिदृश्य पर नजर डालने से ऐसा ही आभास होता है। केरल के कुल 140 विधायकों में से 87 विधायक मुसलमान तथा ईसाई हैं। इसी प्रकार राज्य के 20 मंत्रियों में से 11 ईसाई और मुसलमान हैं। राज्य में मात्र 9 हिन्दू मंत्री हैं। इसके विपरीत राज्य के सभी ईसाई और मुसलमान विधायक,

**शेष पृष्ठ 16 पर**

इस पक्ष में ....


# हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक


"जो जीवन के थके पखेरू, बढ़े चलो हिम्मत न हारो।
पंखों में भविष्य बन्दी है, मत अतीत की ओर निहारो।।" -बलबीर सिंह 'रंग'


वर्ष 14, अंक 24

जनवरी (01-15), 2012

पौष शुक्ल - माघकृष्ण पक्ष
वि.सं.-2068

युगाब्द - 5113



**संरक्षक मण्डल**
श्री विष्णुहरि डालमिया
श्री अशोक सिंहल,
आचार्य गिरिराज किशोर

**सम्पादक**
मानवेन्द्र नाथ पंकज

**परामर्शदाता**
सर्वश्री
डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा,
रघुनन्दन प्रसाद शर्मा,
राजेन्द्र शर्मा, शरद लघाटे
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

**व्यवस्था** - श्री दूधनाथ शुक्ल

**सज्जा** - श्री महेश कुशवाहा



**कार्यालय :**
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com



**वैधानिक सूचना**

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।



**- : मूल्य :-**

विदेशों के लिए .......$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति ......................10 ₹
वार्षिक ......................200 ₹
त्रिवर्षीय.....................500 ₹
पंचवर्षीय ...................800 ₹
दसवर्षीय.................1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.............2,100 ₹


## आवरण कथा

### विहिप-केन्द्रीय प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति बैठक - बृत्त

आ.पृ. 2 तथा 16-19

## विहिप


सेवाभावी हिन्दू संगठन के रूप में सुप्रतिष्ठित विहिप अमेरिका....................................................04

सोशल साइट्स पर प्रतिबंध( ?) सरकार की दोहरी नीति.................................................14

मंगलौर में जनसभा........................................15

जातियों के विखण्डन से मुक्त होने का हिन्दुओं से अशोकजी का आह्वान...................................20

राजनीति के शुद्धिकरण द्वारा देश की सभी समस्याओं का निराकरण सम्भव .....................................21

श्री राम जन्म भूमि पर भव्य मंदिर निर्माण का संकल्प.................................................22


## स्तम्भ


**सम्पादकीय**
भारत की अस्मिता को नेस्तनाबूत करने का विदेशी षडयन्त्र! .................................................02

स्वास्थ्य वीथी .............................................11

सुभाषित...................................................11

रसवती ....................................................11

विचार .....................................................12

पुण्य प्रवाह ..............................................12

प्रेरक जीवन ...............................................13

मासानुसार दान............................................13


## अन्य


भारतीय गैर सरकारी संगठनों के लिए अमेरिका ही सबसे बड़ा दानदाता...............................................03

पूर्वोत्तर भारत में आतंकी गतिविधियों के लिए धनराशि उपलब्ध कराने का ट्रांजिट रूट बना काठमांडू..............07

नक्सलियों का असली चेहरा..............................................................................09

माता महाकाली मंदिर की जमीन की नीलामी स्थगित.......................................................................15

कर्नाटक में 'लव जेहाद' का चढ़ता बुखार; जांच करायेगी प्रान्तीय सरकार..............................................24


## आलेख


भूटान में हिन्दुओं की दुर्दशा; कुम्भकर्णी नींद मं भारत सरकार! ..........आनन्द प्रकाश हरबोला .....................06

विनाश को आमन्त्रण ? ......................................................संध्या जैन ...........................................08

हार्वर्ड : विविधतावादी जंगली! .............................................कार्ल एल. बेंक्स्टन ||| .................... 09

मानवेन्द्र नाथ पंकज

# भारत की अस्मिता को नेस्तनाबूत करने का विदेशी षडयन्त्र !

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास–पाठ्यक्रम से ए. के. रामानुजम के 'थ्री हन्ड्रेड रामायणाज' को हटाने के अकादिमक निर्णय के विरोध में मानवाधिकार/अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का तथाकथित पक्षधर वर्ग जिस प्रकार सारी सीमाएं लांघकर असत्य को प्रतिष्ठापित करने का कुप्रयास कर रहा है, वह दुर्भाग्यपूर्ण व निन्दनीय है। इस अभियान के पीछे अन्तरराष्ट्रीय हाथ है, यह आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा 9 दिसम्बर को ब्रिटेन से जारी बयान से संकेत मिलता है।

ओ.यू.पी. ने एक बयान में 'प्रकाशन घर' के बयान से पलटते हुए कहा कि यह गलत है कि इस प्रकाशन के लिए मॉफी मांगी थी, छात्रवृत्ति के लिए सबसे अच्छा प्रयास है, इस निबन्ध के पुनः प्रकाशन के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

ओ.यू.पी. ने कहा कि 'वर्तमान एकत्र निबन्ध और कई रामायणों की उपलब्धता पर विद्वत समुदाय की चिन्ताओं को दृष्टिगत रखते हुए हमने तुरन्त 'द कलेक्टेड एसेज तथा 'मेनी रामायणाज' की पुनर्मुद्रण तथा उसकी उपलब्धता सुनिश्चित कराने का निर्णय लिया है। हम हमेशा रामायण की उपलब्धता के लिए पूछताछ हेतु तैयार है।'

उपर्युक्त प्रकरण पर विचार करें तो यह तथ्य सामने आता है कि 'राम थे ही नहीं', का शपथ पत्र सर्वोच्च न्यायालय में प्रस्तुत करने वाले वर्ग के वैचारिक हमसफर रामायण के नाम पर इतिहास के पाठ्यक्रम में तथ्यहीन, अनर्गल बातें परोसने पर आमादा है। राम जन–मन में बसे हैं, राम भारत की अस्मिता हैं, रामायण के पात्रों का घटिया प्रस्तुतीकरण हमारी नवीन पीढ़ी को भारतीय मूल्यों अर्थात् हिन्दू संस्कृति से अलग कर उस संस्कृति के विरुद्ध ही औजार के रूप में प्रयोग करने की यदि साजिश नहीं है तो और क्या है?

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की ही बात की जाय तो डॉ. सुब्रमण्यन स्वामी के लेख में व्यक्त विचारों के आधार पर भारत व भारत के बाहर अभियान चलाकर उन्हें हार्वर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम से बाहर कराया गया। जबकि हिन्दू धर्म, संस्कृति, परम्परा, मानदण्डों के विरुद्ध घटिया हरकत पर आमादा लोगों के विरुद्ध कार्रवाई करने की बात तो दूर रही, उन्हें कहीं न कहीं प्रोत्साहित करने का प्रयास भारत सरकार मीडिया, बुद्धिजीवी तबके के एक वर्ग द्वारा किया जा रहा है।

रामायण भारत की एकता का आधार है, भारत की अस्मिता है, हिन्दू मानबिन्दुओं के विरुद्ध विदेशी षडयन्त्र राष्ट्र की अस्मिता को नेस्तनाबूत करने का प्रयास कहा जा सकता है। यदि भारत को अपना अस्तित्व कायम रखना है तो राष्ट्र के नागरिकों को लोकतान्त्रिक पद्धति से इस षडयन्त्र के विरुद्ध खम ठोंकना चाहिए। विद्यालयीय/विश्वविद्यालीय पाठ्यक्रम में हिन्दू संस्कृति के विरुद्ध विष–वमन करती पाठ्य सामग्री स्वीकार्य नहीं की जा सकती। ऐसा प्रयास करने वालों के विरुद्ध कठोर विधिक कार्रवाई की जाय तो समीचीन होगा।

# भारतीय गैर सरकारी संगठनों के लिए अमेरिका ही सबसे बड़ा दानदाता

भारत के विभिन्न गैर सरकारी संगठनों को मदद करने में अमेरिका ही फिर से पहले नम्बर पर है। वर्ष 2009–10 के दौरान आयी कुल 10,337 रूपये की विदेशी मदद में से एक तिहाई से अधिक राशि अमेरिका द्वारा ही दी गयी है। वर्ष 2009–10 के ताजा आंकड़े भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा संसद में प्रस्तुत किये गये हैं। इन आंकड़ों से पता चलता है कि मदद करने वालों में जर्मनी दूसरे नम्बर पर है। पहले दूसरे नम्बर पर यूके हुआ करता था।

गृह मंत्रालय द्वारा उपलब्ध करायी गयी जानकारी के अनुसार अमेरिका ने विभिन्न संगठनों को कुल 3,038 रूपये की मदद की। जबकि जर्मनी ने 1,045, यूके ने 1,038, इटली ने 583 और नीदरलैंड ने 509 करोड रूपये की मदद की। गृह मंत्रालय के पिछले साल के आंकड़ों के आधार पर यदि विश्लेषण किया जाए तो पिछले कुछ वर्षों से ही यही पांच प्रमुख देश हैं जो भारत के विभिन्न संगठनों को पैसा भेजते रहे हैं। **इन पांच देशों से जो पैसा आता है वह इस संबंध में आने वाली कुल विदेशी राशि का करीब 50 प्रतिशत है।**

आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2009–10 के दौरान आयी कुल 10,337 रूपये की इस राशि में से सर्वाधिक 944 करोड़ रूपये की राशि ग्रामीण विकास हेतु काम करने वाले संगठनों को मिली। इसके बाद 742 करोड़ रूपये बाल विकास, 630 करोड़ रूपये स्कूल तथा कालेजों के निर्माण तथा उनकी मरम्मत के लिए आयी। वर्ष 2008–09 के आंकड़ों से भी लगभग इसी प्रकार की जानकारी सामने आयी थी। पिछले पांच वर्षों के दौरान एड्स नियंत्रण के नाम पर भी काफी पैसा आया।

वर्ष 2005 से लेकर वर्ष 2009–10 तक की पांच साल की अवधि में भारतीय संगठनों द्वारा कुल 49,968 करोड़ रुपये की विदेशी सहयोग राशि प्राप्त की गयी। वर्ष 2009–10 में कुल 21,508 भारतीय संगठनों ने यह राशि प्राप्त की, जबकि इससे पिछले साल यानि 2008–09 के दौरान कुल 21,542 संगठनों ने राशि प्राप्त की थी। गृह मंत्रााालय के एक अधिकारी ने बताया कि वर्ष 2010–11 के संबध में पूरी जानकारी अभी प्राप्त नहीं हुई है और मंत्रालय द्वारा सभी पंजीकृत संगठनों को कहा गया है कि वे 31 दिसम्बर, 2011 से पूर्व अपनी रिटर्न जमा कर दें।

गृह मंत्रालय के आंकड़ों से पता चलता है कि विदेशी सहायता राशि सिर्फ अमीर और विकसित देशों से ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, जांबिया, कांगो तथा दूसरे गरीब देशों से आई है। हालांकि गरीब देशों द्वारा जो पैसा भेजा गया है वह बहुत थोड़ा है। वर्ष 2009–10 के दौरान नेपाल से 12 करोड़, चीन से 2.8 करोड़, अफगानिस्तान से 1.9 करोड़, पाकिस्तान से 1.2 करोड़ और बांग्लादेश से 86 लाख रूपये प्राप्त हुए हैं।

संसद में दी गयी जानकारी में गृह मंत्रालय ने बताया कि विभिन्न संगठनों से रिटर्न इसलिए मांगी जाती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विदेशों से जिस काम के लिए पैसा आया वह उसी काम में खर्च हुआ अथवा किसी अन्य अवांछनीय गतिविधि में खर्च हुआ।

(टी.एन.एन., नई दिल्ली, 7 दिसम्बर, 2011)

# काले धन को विदेश में जाने से रोकने में केन्द्र सरकार विफल

यदि अमेरिकी तथा यूके को छोड़ दें तो पिछले तीन साल के दौरान भारतीय कंपनियों ने उन देशों में ही पैसा लगाया है जो **"टैक्स हैवन"** के नाम से कुख्यात हैं। वित्त मंत्रालय द्वारा जारी ताजा आंकड़ों से साफ पता चलता है कि भारत सरकार काले धन को विदेश जाने से रोकने में नाकामयाब रही है। पिछले तीन सालों में भारतीय कंपनियों द्वारा जो पैसा विदेशों में भेजा गया है उसका करीब 40 प्रतिशत रीयल इस्टेट, बीमा आदि में निवेश हुआ है। इन सभी मामलों में निवेश हुए पैसे की वास्तविक कीमत का पता लगाना बहुत मुश्किल है। तीन सालों के दौरान कुल 31,450 मिलियन डालर की राशि में से 40 प्रतिशत यानि कुल 12,703 मिलियन डालर की राशि सिर्फ रियल इस्टेट में निवेश की गयी।

भारतीय कर चोरों द्वारा जो पैसा इन कुख्यात देशों में निवेश किया गया है वहां निवेश करते समय सरकार यह पूछती ही नहीं कि निवेशकर्ता के पास

वह पैसा कहां से आया। ऐसे देशों में प्रमुख हैं सिंगापुर, मॉरीशस, नीदरलैंड, साइप्रस, ब्रिटिश विरजिन आइलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, केमन आइलैंड और चैनल आईलैंड आदि प्रमुख हैं। पिछले तीन सालों में सबसे अधिक पैसा सिंगापुर, मॉरीशस तथा नीदरलैंड गया है।

(टी.एन.एन., नई दिल्ली, 7 दिसम्बर, 2011)

# सेवाभावी हिन्दू संगठन के रूप में सुप्रतिष्ठित विहिप अमेरिका

विश्व हिन्दू परिषद् अमेरिका की 41वीं वार्षिक (वर्ष 2011) प्रबंध समिति की बैठक 18 से 20 नवम्बर को अमेरिका के न्यूजर्सी शहर में आयोजित की गयी। बैठक में अमेरिका के विभिन्न प्रान्तों से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तीन दिवसीय नीति निर्धारण समिति की इस बैठक की शुरुआत न्यूजर्सी इकाई की अध्यक्षा सुश्री आशा वैष्णव के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने सभी प्रतिनिधियों द्वारा त्याग एवं समर्पण भाव से की जा रही हिन्दू समाज की सेवा भावना की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

विहिप अमेरिका के अध्यक्ष ज्योतिष पारेख ने विहिप द्वारा पिछले 40 साल से अमेरिका में हिन्दू समाज हेतु की जा रही विभिन्न सेवा गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि, ''पिछले 40 साल में विहिप ने अनेक महत्वपूर्ण मंजिलें तय की हैं तथा इस यात्रा में कई मील के पत्थर स्थापित किये हैं। सबसे बड़ी उपलब्धि विहिप द्वारा की जा रही सेवा गतिविधियां हैं और कार्यकर्ताओं के अनन्य त्याग और सेवा भावना के कारण ही आज संगठन के पास समर्पण भाव से काम करने वाले हजारों कार्यकर्ताओं की एक बहुत बड़ी टीम है। पिछले 40 वर्ष से लगातार काम करने वाले कार्यकर्ताओं का भी एक बड़ा समूह विहिप के पास है, जो संगठन की बड़ी ताकत है।''

बैठक में विहिप द्वारा संचालित अनेक महत्वपूर्ण प्रकल्पों पर भी चर्चा हुई। इनमें प्रमुख है **'आश्रय'** जो भूटान से आये लोगों के पुनर्वास हेतु संचालित है। इसके तहत वर्ष 2008 के बाद से भूटान से आने वाले करीब 60,000 लोगों, खासतौर से हिन्दुओं तथा बौद्धों के पुनर्वास का कार्य होता है। ये शरणार्थी अमेरिका के अनेक प्रान्तों में रह रहे हैं।

ऐसा ही दूसरा प्रकल्प है एस.ए.सी. **(सपोर्ट ए चाइल्ड)**। यह करीब 25 साल पुराना प्रकल्प है। इसके तहत शहरों में रहने वाले अनाथ तथा त्याग दिये गये बच्चों को बेहतर भविष्य प्रदान करने का प्रयास होता है। इन बच्चों हेतु करीब 250 अमेरिकी डालर की राशि खर्च की जाती है और इसमें शिक्षा, रहना–खाना तथा स्वास्थ्य आदि की चिंता की जाती है। इस प्रकल्प के तहत भारत के करीब 14 राज्यों में ऐसे 600 से अधिक बच्चों की मदद की जाती है। प्रबंध समिति की इस बैठक में निर्णय लिया गया है कि वर्ष 2012 में इस राशि में 20 प्रतिशत की वृद्धि करके कम से कम 1000 बच्चों की मदद की जाएगी।

विहिप अमेरिका का तीसरा महत्वपूर्ण प्रकल्प है एच.एम.ई.सी. **(हिन्दू मंदिर कार्याधिकारी सम्मेलन)**। इस प्रकल्प के तहत विभिन्न मंदिरों व हिन्दू संगठनों के कार्याधिकारियों को हिन्दू समाज की विभिन्न आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाकर उन्हें विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से जोड़ा जाता है। इस प्रकल्प में अमेरिका तथा कनाडा के मंदिरों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के समाधान का प्रयास भी होता है। विहिप द्वारा ऐसे अधिकारियों का छठा वार्षिक सम्मेलन हाल ही में कोलम्बस में आयोजित किया गया था और अगले साल का सम्मेलन सेनफ्रांसिसको में आयोजित होगा।

ऐसा ही एक प्रकल्प है सी.एच.वाई. यानि कॉलिशन **ऑफ हिन्दू यूथ**। इसके तहत उन युवकों को एकजुट किया जाता है जो मंदिरों में सेवा करना चाहते हैं। ये युवक मंदिर गतिविधियों का प्रमुख आधार हैं। इस प्रकल्प के तहत युवा बाल विहार, युवा शिविर, युवा सम्मेलन का भी आयोजन होता है।

**'हवन'** प्रकल्प यानि हिन्दू अमेरिकन वानप्रस्थी नेटवर्क का शुभारम्भ हिन्दू समाज के वरिष्ठ लोगों के अनुभव का लाभ उठाने के लिया किया गया। वर्ष 2011 के दौरान ऐसे वानप्रस्थी लोगों के दो सम्मेलन आयोजित किये गये और वर्ष 2012 में भी कई सम्मेलन आयोजित करने का लक्ष्य है। वर्ष 2012 में विहिप अमेरिका की ओर से हिन्दू युवा सम्मेलन तथा हिन्दू महिला सम्मेलन भी आयोजित करने की तैयारी है।

प्रबंध समिति की बैठक में डा. अभय अष्ठाना को तीन साल के लिए महासचिव चुना गया। डा. उमेश शुक्ला तथा श्री विमल सोधानी को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। इसके बाद नवनियुक्त महासचिव डा. अभय अष्ठाना ने विभिन्न पदाधिकारियों की घोषणा की। बैठक में नौ महत्वपूर्ण हिन्दू संगठनों के प्रतिनिधि भी पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थे।

(5 दिसम्बर)

vijaynarang1@gmail.com

## कश्मीर में ऐतिहासिक माता मन्दिर को जलाया गया

पिछले सप्ताह असामाजिक तत्वों ने डोडा जिले के देसा क्षेत्र में पड़ने वाले गालाधार टोप पर बने ऐतिहासिक माता चण्डी के मंदिर को जला दिया तथा माता की मूर्ति को भी खंडित कर दिया। इस मंदिर पर पहले भी दो बार आतंकवादियों ने हमला किया लेकिन स्थानीय लोगों की वजह से मंदिर को क्षतिग्रस्त होने से बचा लिया गया। स्थानीय लोगों नें मंदिर पर हुए हमले को लेकर पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज करवाई थी। लेकिन मंदिर की सुरक्षा के बंदोबस्त नहीं किए गए। इसी का फायदा उठाते हुए असामाजिक तत्वों ने गत सप्ताह मंदिर को जला दिया तथा मूर्ति को खंडित कर दिया। मंदिर को जलाए जाने पर रोष जताते हुए बजरंग दल के प्रांत संयोजक नीरज धुनेरिया ने प्रशासन को चेतावनी दी कि 72 घंटे के भीतर प्रशासन मंदिर का पुनर्निर्माण करवाए और आरोपियों को जल्द गिरफ्तार करे।

www.bhaskar.com-16 Dec.

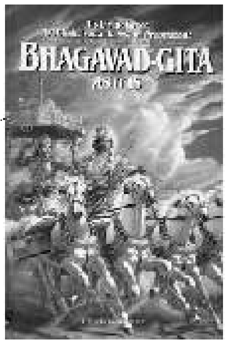


# हिन्दुओं के संघर्ष के बीच रूसी न्यायालय द्वारा गीता पर निर्णय स्थगित

साइबेरिया के तोम्सक शहर में स्थानीय न्यायालय द्वारा 'भगवद् गीता' पर प्रतिबंध लगाने की घटना के बाद 19 दिसम्बर को रूस में जबर्दस्त विरोध प्रदर्शन कर हिन्दुओं ने इस प्रतिबंध से पवित्र पुस्तक गीता को बचाने का अंतिम प्रयास किया। रूस में रह रहे हिन्दुओं की ओर से वकील मिखाइल फरलेव द्वारा न्यायालय के समक्ष किये गये निवेदन के बाद साइबेरियन न्यायालय ने रूसी मानवाधिकार पैनल को 28 दिसम्बर को अपना पक्ष न्यायालय के समक्ष रखने की अनुमति प्रदान कर दी।

श्री फरलेव ने न्यायालय से निवेदन किया था कि अपना अंतिम निर्णय सुनाने से पूर्व वह भगवद् गीता तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों के संबंध में रूसी मानवाधिकार समिति के विचार अवश्य सुने। मॉस्को में रहने वाले हिन्दू साधु प्रिय दास, जो मॉस्को स्थित साल 40 साल पुराने कृष्ण मंदिर के भक्त हैं, ने बताया कि उनके इस निवेदन के बाद न्यायालय उनके विचार सुनने के लिए सहमत हो गया है।

जून माह से चल रहा यह मामला भगवद् गीता के रूसी अनुवाद ('भगवद् गीता एज इट इज') के विरुद्ध है। यह अनुवाद इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कांसियसनेस (इस्कॉन) के संस्थापक भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद ने किया है। मुकदमे में सम्पूर्ण रूस में गीता पर प्रतिबंध लगाने, वहां इसके वितरण तथा इसे ऐसा सहित्य करार देने की मांग की गयी है जो समाज में अव्यवस्था फैलाता है।

मॉस्को में रह रहे करीब 15000 हिन्दुओं तथा इस्कॉन भक्तों ने भारत सरकार से अपील की है कि वह इस मामले में कूटनीतिक दृष्टि से हस्तक्षेप कर इसका सही समाधान निकलवाने में मदद करे। हिन्दुओं के वकील फरलेव ने कहा कि न्यायालय से इसलिए अपील की गयी क्योंकि गीता के बचाव में जितने भी तरीके अपनाए जा सकते हैं, उनका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। (टी.एन.एन., 20 दिसम्बर)

## रूस में गीता पर प्रतिबंध के प्रयासों की नीदरलैंड में निंदा

अम्स्तेर्दम, 21 दिस.। रूस में हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथ भगवद् गीता पर पाबंदी लगाने के हाल के प्रयासों को लेकर नीदरलैंड में बसे हिंदू समुदाय के लोग बेहद क्षुब्ध और आक्रोशित हैं।

अम्स्तेर्दम स्थित हिन्दू संगम की मंत्री मार्ग वन बर्कल ने कहा कि हमने रूसी न्यायपालिका और वहां की सरकार से हिंदू नागरिकों के मूलभूत अधिकारों को बरकरार रखने का आग्रह किया है। भगवद् गीता पर प्रतिबंध लगाने के बारे में अदालत के किसी भी आदेश अथवा कानून को रूस में बसे हिंदू समुदाय की नागरिक छूट पर सीधा हमला तथा दुनिया भर में फैले हिंदुओं का अपमान माना जाएगा।

हिन्दू संगम के सदस्यों ने औपचारिक तौर पर अपनी चिंताओं से डी हेग में रूसी दूतावास के अधिकारियों को अवगत कराया और आगे इसके निदान के लिए बैठक का आग्रह किया।

अम्स्तेर्दम स्थित संस्था श्री सनातन धर्म (हिन्दू संगम) ने कहा कि रूसी अभियोजकों की यह कार्रवाई दमनकारी तथा घृणित है जो समर्थन योग्य नहीं है। यह रूस में हिंदुओं की धार्मिक आजादी पर कठोरता से प्रतिबंध लगाने के प्रयासों को बल प्रदान करती है।

एक पवित्र ग्रंथ के बारे में संकीर्ण एजेंडा से दुनिया भर में एक अरब से ज्यादा हिंदुओं की भावनाओं पर चोट पहुंची है। रूसी अधिकारी एक स्वतंत्र समाज के सिद्धांतों के विपरीत काम कर रहे हैं।

प्रस्तुति : विहिप नीदरलैंड
vhpsamparknl@gmail.com

## कनाडा की नागरिकता की शपथ के लिए नकाबपोश महिलाएं प्रतिबन्धित

टोरंटो, 11 दिसम्बर (पी.टी.आई.)। बुर्का या हिजाब पहनने वाली महिलाओं को कनाडा की नागरिकता की शपथ लेने से वर्जित किया गया है। आव्रजन मंत्री जेसन केनी ने कहा कि यह कदम जरूरी हो गया था। चेहरे ढंकी महिलाओं की शपथ समारोह में पहचान नहीं हो सकती है। मॉन्ट्रियल राजपत्र में यह घोषणा अधिसूचित की गई।

यह प्रतिबंध इस्लामी समुदाय के बीच व्यापक चिंताओं को उभार सकता है जिनको यह डर है कि इसी तरह के अन्य प्रतिबंध भी उनपर लगाए जा सकते हैं। फ्रांस, बेल्जियम, ऑस्ट्रेलिया और नीदरलैंड्स जहां चेहरे को बुर्का द्वारा ढंकी महिलाओं पर प्रतिबंध लगा दिया है, कनाडा अब इन जैसे देशों में शामिल हो गया है। आस्ट्रेलिया में प्रतिबंध केवल दो राज्यों में लगाया गया है।

आप्रवास मंत्री ने कहा कि महिलाओं द्वारा चेहरे पर नकाब के बारे में गलतफहमी थी। उन्होंने कहा कि विधिवेत्ताओं व न्यायाधीशों से उन्हें शिकायत मिली थी कि यह जानना मुश्किल है कि नकाबपोश वास्तव में शपथ पढ़ रहे थे या नहीं।

आनन्द प्रकाश हरबोला

# भूटान में हिन्दुओं की दुर्दशा ; कुम्भकर्णी नींद में भारत सरकार!

एक दिसम्बर को मेरा भूटान प्रवास विहिप अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अशोक जी सिंहल की इच्छानुसार प्रारंभ हुआ। विषय था–भूटान में निवास कर रहे नेपालीभाषी–हिन्दीभाषी हिन्दू समाज की अवस्था का अध्ययन करना तथा सामयिक अध्ययन।

विहिप भूटान चैप्टर के अध्यक्ष महेश अग्रवाल जी ने प्रवास की समुचित व्यवस्था बनाई थी। 2 दिसंबर को वहां पहुंचे, रात्रि में कुछ लोगों से भेंट/मुलाकात हुई। 3 दिसम्बर को सारा दिन भूटान में रह रहे हिन्दू समाज की सामाजिक, राजनैतिक, व्यापारिक, पारिवारिक परिस्थितियों के संबंध में भूटान के अनेक जिलों से आये अपने हिन्दू बंधुओं ने अपनी समस्या सुनाई, अनेक प्रकार से जानकारियां उपलब्ध कराईं, रात्रि 9 बजे तक बैठकों का दौर चलता रहा। 4 दिसंबर को अपने बंधुओं से प्रत्यक्ष जाकर मिलने का कार्यक्रम प्रातः से ही रहा।

कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार 17वीं शताब्दी में तिब्बत से सबदुंगलामा नाम के एक बौद्ध लामा आये। उन्होंने वहां निवास कर रहे आदिवासी–हिन्दुओं को जो बिल्कुल अशिक्षित व सामान्य जीवन जी रहे थे, को अपनी लामा भाषा का ज्ञान कराया। उनको खेती करना सिखाया, कुछ संस्कार जगाए, बौद्ध धर्म की दीक्षा दी। धीरे–धीरे इस समाज को सारछोप्पा नाम से जाना जाने लगा। ये आज के भूटान के मूल निवासी हैं, बहुसंख्यक भी हैं। इस समाज की श्रद्धा–आस्था के केन्द्र हैं।

तिब्बत से 17वीं शताब्दी में आए, बौद्ध धर्मगुरु, सवदुंगलामा जी, यह सारछोप्पा समाज आज भी उनको अवतार के रूप में मानता है। क्योंकि इन्हीं लामा ने इन आदिवासी समाज का सब प्रकार से मार्गदर्शन किया था; परन्तु लामाजी आज इस लोक में नहीं हैं। इस समाज का अधिकतम वर्ग भूटान के पूर्वी जोन में निवास करता है जिसमें 5 जिले आते हैं।

वर्तमान राजपरिवार भी 105 वर्ष पूर्व तिब्बत से भूटान आया। तब भूटान का पूर्व नाम ड्रुक देश था। भूटान के वर्तमान राजवंश में 5 राजा अब तक हुए हैं। प्रथम राजा जिगमे वांगचुक, द्वितीय राजा उगेन वांगचुक, तृतीय राजा जिगमेदोरजी वांगचुक, चतुर्थ राजा जगमे सिंग वांगचुक तथा वर्तमान पांचवे राजा खेसार नामगेयाल वांगचुक हैं।

भूटान स्टेट एक घोषित बौद्ध स्टेट है, यहां पर तीन प्रकार के बौद्ध रहते हैं। प्रथम प्रकार है–राजवंशीय बौद्धों का जिनको नगलोप्सा बौद्ध कहते हैं। दूसरे प्रकार के सारछोप्पा बौद्ध हैं जो यहां के आदिवासी हैं। तीसरे प्रकार के लहोछम्प्पास बौद्ध हैं, ये नेपालीभाषी हैं। इन सबकी जनसंख्या साढ़े चार लाख के लगभग है।

इसके अतिरिक्त 2 लाख के लगभग नेपाली भाषी तथा हिन्दीभाषी सनातन धर्मी हिन्दू समाज है तथा इसके अतिरिक्त 60 हजार के लगभग मुस्लिम तथा धर्मान्तरित इसाई हैं।

भूटान में मुस्लिमों की घुसपैठ तथा ईसाई व मुस्लिमों द्वारा धर्मान्तरण का षड़यन्त्र बड़ी तेज गति से चल रहा है। ऐसा लगता है कि धर्मान्तरण का यह काम राज्याश्रय प्राप्त है। क्योंकि भूटान देश में बौद्ध गुम्बाओं के अलावा सनातनी मंदिर तो कहीं दिखते ही नहीं हैं। इसके विपरीत भारत की सीमा पर मस्जिद–मदरसों व चर्चों की मानो बाढ़ आयी है। केवल एक छोटा सा सीमावर्ती नगर जयगाँव में 46 चर्च स्थापित हैं, 17 मस्जिदें हैं, 15 मदरसे हैं जो आनेवाले समय में भारत के लिए तो संकट बनने ही वाले हैं। भूटान के अस्तित्व को भी चुनौती देने वाले हैं।

भूटान की कुल जनसंख्या लगभग 7 लाख के करीब है जिसका सामाजिक विभाजन पहले दिया गया है। भूटान का कुल क्षेत्रफल 46,500 वर्ग कि0मी0 है जिसके प्रशासनिक दृष्टि से 5 जोन ईस्ट, वेस्ट, नार्थ, साउथ तथा मिडिल बनाए गए हैं, 20 जिले बनाए गए हैं। **इन 20 जिलों में से 7 जिलों में सनातनी हिन्दू निवास करता है। जिसकी जनसंख्या लगभग 2 लाख है।**

भूटान की पहचान में वहां का मूल बौद्ध समाज बड़े गर्व से कहता है ड्रुग–ड्रुप्पा–ड्रेगन। ड्रुग यानि भूटान का पूर्व नाम, ड्रुप्पा माने ड्रुप देश में रहनेवाला बौद्ध समाज तथा ड्रेगन यानि वहां का राज्यचिह्न जो चीन का भी राज्यचिह्न है।

भूटान के साथ भारत के संबंध राजनैतिक तौर से बहुत मधुर हैं, मैत्रीपूर्ण हैं। परन्तु व्यवहारिक रूप में वहां रह रहा सनातनी हिन्दू समाज से बहुत द्वैतभाव है, उत्पीड़न का भाव है जो दोनों देशों के बीच सौहार्द्र–मैत्री आदि के लिए संकट पैदा कर सकता है।

ऐसा फर्क व्यवहार क्यों है ?यह निश्चिय ही शोध का विषय है। जबकि यह सनातनी हिन्दू समाज वहां के आर्थिक विकास के आधारस्तंभ के रूप में काम कर रहा है, देश व समाज के विकास में अपना सब प्रकार से योगदान देनेवाला यह सनातनी हिन्दू समाज पग–पग पर दुत्कारा जा रहा है, प्रताड़ित व अपमानित किया जा रहा है।

भारत सरकार को भूटान सरकार से इस संबंध में अवश्य सकारात्मक चर्चा करनी चाहिए और एक सर्वमान्य निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

भूटान में भी सन् 2009 में प्रजातंत्र की घोषणा वहां के महाराजा के द्वारा हुई। चुनाव भी हुए, चुनी हुई सरकार आज भूटान में शासन चला रही है जिसमें राज्यपक्ष अल्पमत में है। **(क्रमशः)**

**आगामी अंक में**

**थिम्पू में 3 चर्च स्थापित हो गए हैं। जिस दिन 3 दिसंबर को मैं जयगांव में था, उस दिन भी 20 परिवारों का धर्मान्तरण हुआ।**

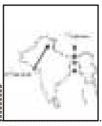

# पूर्वोत्तर भारत में आतंकी गतिविधियों के लिए धनराशि उपलब्ध कराने का ट्रांजिट रूट बना काठमांडू

भारत में आतंकी गतिविधियों के लिए आ रहे विदेशी पैसे पर नजर रखने वाली एजेंसियों को इस बात की पुख्ता जानकारी मिली है कि यह पैसा अब नेपाल के रास्ते आ रहा है। हाल ही में भारतीय एजेंसियों को पता चला है कि उत्तर पूर्वांचल के एक आतंकी संगठन के लिए पैसा सिंगापुर से भेजा गया और आतंकी संगठन को यह पैसा काठमांडू में दिया गया।

सूत्रों के अनुसार यह पैसा असम तथा नगालैंड में सक्रिय आतंकी संगठन दीमा हौलम दाओगाह (ज्वेल समूह) को दिया गया। करीब 200,000 डालर की यह राशि सिंगापुर से काठमांडू स्थित एवरेस्ट बैंक की न्यू बानेश्वर शाखा के जरिए भेजी गयी। यह आतंकी संगठन पिछले कुछ समय से असम तथा नगालैंड में रहने वाले दिमासा लोगों हेतु 'दिमासालैंड' नाम से अलग होमलैंड की मांग करता रहा है।

जांचकर्ताओं का मानना है कि करीब एक करोड़ की यह राशि डीएचडी (जे) के स्वयंभू कमांडर इन चीफ निरंजन होजई द्वारा भेजी गयी। नेशनल इंवेस्टिगेटिव एजेंसी (एनआईए) ने होजई को आतंकी संगठनों तक पैसा पहुंचाने के दो मामलों में मुख्य आरोपी बनाया हुआ है। इसके अलावा उसका अन्य आतंकी संगठनों से भी संबंध रहा है।

इस समय यह पैसा सिंगापुर के सिटी बैंक से काठमांडू में रहने वाली होजई की पत्नी सरिता गिरि राय के खाते में भेजा गया। इस संबंध में पुख्ता जानकारी मिलने के बाद जांच एजेंसियों ने सिंगापुर तथा नेपाल के अधिकारियों को सतर्क कर दिया है। नेपाली अधिकारियों ने तुरन्त कार्रवाई करते हुए श्रीमती राय को बुलाकर पूछताछ भी की, किन्तु वह इस बात का संतोषजनक जवाब नहीं दे पायी कि आखिर इतनी बड़ी राशि उसके पास कहां से आई और किसलिए आई। बताया जाता है कि उसने पूछताछ में स्वीकार किया कि वह सारा पैसा उसके पति का है। खबर है कि भारत सरकार नेपाल सरकार को यह संदेश भेज रही है कि इस सारी राशि को विदेशी पूंजी नही, बल्कि 'आतंकी राशि' मानकर ही कार्रवाई की जाए।

इसी बीच भारतीय जांच एजेंसियां सिंगापुर में इस पैसे का स्रोत पता करने की कोशिश कर रही हैं। भारतीय जांच एजेंसियां इस बात को लेकर आश्वस्त हैं कि यह पूरी राशि भारत से ही विभिन्न आतंकी गतिविधियों के लिए जबरन वसूली गयी है। सूत्रों का कहना है कि यह पता लगाना बहुत मुश्किल है कि कौन सा पैसा आतंकी गतिविधियों के लिए आ रहा है, किन्तु इस लेन–देन से साफ पता चल गया है कि यह पूरा पैसा आतंकी गतिविधियों के लिए ही आया।

# इंडियन मुजाहिद्दीन ने बदला आतंक फैलाने का तरीका

**विचारधारा के आधार पर नहीं, बल्कि क्षेत्र विशेष के लोगों को साथ लेकर बना रहे हैं नये समूह**

चेन्नई, उत्तर बिहार तथा दिल्ली में फैले इंडियन मुजाहिद्दीन के आतंकी नेटवर्क पर नजर रखने वाले भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के जांचकर्ताओं के सामने आतंकवाद का एक नया रूप आया है। जांचकर्ताओं को जो जानकारी मिल रही है उससे पता चलता है कि इंडियन मुजाहिद्दीन अब विचारधारा के आधार पर नहीं, बल्कि क्षेत्र विशेष के लोगों के एक समूह को आधार बनाकर अपनी आतंकी गतिविधियों का संचालन करने लगा है। जबकि पहले इन आतंकी गतिविधियों का प्रमुख आधार विचारधारा होती थी।

जांचकर्ताओं का कहना है कि अभी तक जो जानकारी सामने आयी है उसके अनुसार नये नेटवर्क में सिर्फ उत्तर बिहार के मुसलमानों को ही शामिल किया गया है ताकि उनकी आपसी निकटता के कारण किसी को उन पर शक न हो। इस नये समूह के सदस्य भले ही किसी न किसी मदरसे से जुड़ें हैं, लेकिन इनके एक साथ आने की अहम कड़ी इन सभी का उत्तर बिहार से संबंधित होना है। **'किनशिप टेरर'** नाम से उजागर हुए इस नये नेटवर्क में सदस्य इस आधार पर एकजुट नहीं होते कि वे पहले सभी प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिमी अथवा किसी अन्य आतंकी संगठन के सदस्य होने के कारण इंडियन मुजाहिददीन नाम से आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए एकजुट हुए थे। आतंक के इस नये गिरोह में सिर्फ ऐसे लोग शामिल हैं जो आपस में भाषा, खान–पान, रहन–सहन आदि के आधार पर इतने मिलते–जुलते हैं कि इनमें किसी अजनबी को पहचानना बहुत मुश्किल है। यही नहीं, आतंकी गतिविधियों के लिए उन्हें मदद भी वही लोग करते हैं जो उस क्षेत्र से ही जाकर विभिन्न स्थानों पर रहते हैं। वे बड़ी आसानी से एक शहर से दूसरे शहर में जाकर उनके बीच रह सकते हैं। इससे यह फायदा होता है कि कौन आदमी किस मकसद से आया है। यह उनके साथ रहने वाले अन्य लोगों को भी पता नहीं चल पाता।

**शेष पृष्ठ – 11 पर**

**विश्लेषण** | संध्या जैन

## खुदरा व्यापार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को अनुमति

# विनाश को आमन्त्रण ?

यदि कांग्रेस के नेतृत्व वाली केन्द्रीय संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार को हमने आज खुदरा व्यापार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देने से नहीं रोका तो हमारे खुदरा बाजार की दशा हमारी कल्पना से भी बदतर होगी। यदि ऐसा हुआ तो करोड़ों लोगों को बेरोजगार करके उनके स्थान पर सिर्फ मोटा मुनाफा कमाने वाली विशाल कॉरपोरेट कंपनियों की फूड चेन ही दिखायी देगी और हमारी फसलों की विविधता वाली खेती की बजाए अनुबंध खेती और मोनो कल्टीवेशन का नजारा देखने को मिलेगा। इसके अलावा हमारे किसान ईस्ट इंडिया कंपनी की 21वीं शताब्दी की 'क्लोन' कंपनियों के बंधुआ मजदूरों की जिंदगी जीने को मजबूर होंगे।

यह सोचकर ही आश्चर्य होता है कि आखिर कैसे हमारी अपनी सरकार सत्ता के नशे में चूर होकर 100 साल पूर्व बिहार के चम्पारण में घटे दर्दनाक इतिहास को फिर से दोहराने के लिए आमंत्रित कर रही है। करीब एक शताब्दी पूर्व चम्पारण में तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने वहां के किसानों को अपनी परम्परागत खाद्यान्न उत्पन्न करने वाली खेती की बजाए नील की खेती करने के लिए बाध्य किया और उस खेती पर सभी प्रकार से यानि उत्पादन, मार्केटिंग, लाभांश आदि पर अंग्रेजों का ही एकाधिकार था।

'फ्री ट्रेड' यानि खुले व्यापार के नाम जो कुछ करने का प्रयास हो रहा है, वह इस बात का सबूत है कि दुनिया फिर से उपनिवेशवाद की चपेट में आ चुकी है। लीबिया के मुअम्मर गद्दाफी को सिर्फ इसलिए अपनी सत्ता तथा जान गंवानी पड़ी क्योंकि उसने अपने देश में मौजूद तेल को पश्चिमी देशों की उन विशाल बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निर्धारित कीमत पर बेचने से मना कर दिया ताकि वे कंपनियां मनमाना मुनाफा कमा सकें और लीबिया के लोग घाटे के बोझ तले दबते जाएं। इराक के सद्दाम हुसैन को भी लगभग इसी प्रकार के कारणों से अपनी जान तथा सत्ता गंवानी पडी।

**खुदरा व्यापार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को अनुमति देने का मतलब है बहुराष्ट्रीय कंपनियों को यह ताकत प्रदान कर देना है कि उत्पादन संबंधी सभी प्रकार के जोखिम पहले से ही असुरक्षित छोटे किसानों पर डाल दें, किन्तु मुनाफे पर पूरा नियंत्रण कंपनियों का ही रहेगा।**

कहने का अभिप्राय यह है कि खुदरा बाजार में प्रत्यक्ष विदेश निवेश भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए विनाशकारी साबित होगा। इस दावे में बिल्कुल भी दम नहीं दिखता कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों अथवा भारत की ही बड़ी कंपनियों द्वारा खुदरा बाजार पर एकाधिकार स्थापित कर लेने का सीधा भारतीय उपभोक्ताओं या किसानों को फायदा होगा। इस विनाशकारी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की वकालत करने वाले भी यह दावा नहीं कर रहे हैं कि विदेशी निवेश उन सभी 44 मिलियन छोटे कारोबारियों या हॉकरों को रोजगार उपलब्ध करवा देगा जो इसके बाद बेरोजगार हो जाएंगे। जिन लोगों ने पिछले दशक में नये उद्योगों की कतार को उगते देखा है वे इस बात को जानते हैं कि उनके बाद भी बहुत कम लोगों को रोजगार मिला है और उसमें भी रोजगार की सुरक्षा तथा अन्य लाभों में कमी ही आई है। इसकी अपेक्षा देशभर में हजारों युवकों को यह कहकर फंसाया गया कि वे उपभोक्ताओं को फंसाकर लाएं ताकि कंपनियों का मुनाफा बढ़े। इस काम के बदले उन युवकों को इतनी कम राशि का भुगतान किया जाता है जो शोषण की पराकाष्ठा ही प्रतीत होता है।

विदेशी निवेश की वकालत करने वाले आजकल एक और मंत्र का जाप कर रहे हैं। वह मंत्र है बिचौलियों की समाप्ति। उनका कहना है कि बिचौलियों को कारोबार से निकालकर पैसा बचेगा और उससे कीमतें कम होंगी यानि महंगाई कम हो जाएगी। वे यह दर्शाना चाहते हैं कि किसान के खेत से शहरी उपभोक्ता तक खाद्य सामग्री को पहुंचाने में बिचौलियों की कोई भूमिका नहीं होती। यह भी झूठी अफवाह के अलावा कुछ नहीं है कि बड़ी कंपनियां अनुबंध खेती की मदद से नयी तकनीक का उपयोग करते हुए उपभोक्ताओं को सस्ता माल उपलब्ध करवाएंगी।

विदेशी कंपनियों के गीत गाने वाले हमारे भारतीय 'वकील' क्या बता सकते हैं कि पुराने जमाने के जमींदार खेती में खुद कितना निवेश करते थे? इसके अलावा क्या वे यह भी बता सकते हैं कि कुछ भी निवेश न करने के बावजूद वे अन्न पैदा करने वाले किसान पर कितना अनाज छोड़ते थे?आज बड़ी कंपनियों को लेकर जो दलीलें दी जा रही हैं वे भी इतनी ही संदिग्ध हैं। यह कहना कि बड़ी कंपनियां बड़े पैमाने पर ढ़ांचागत विकास करके उत्पादन में होने वाली वेस्टेज यानि अपव्यय को रोकेंगी। **हकीकत यह है कि वे बड़े-बड़े कोल्ड स्टोरों की स्थापना अपव्यय को कम करने के लिए नही; बल्कि राष्ट्र खाद्यान्न सप्लाई पर अपना एकाधिकार कायम करने के लिए करेंगी।** जरूरत इस बात की है कि हम ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा अथवा किसी अन्य वैकल्पिक ऊर्जा से संचालित कोल्ड स्टोरों की स्थापना करें ताकि गांव के खाद्यान्न उत्पादक को इसका लाभ हो और वे उसके खर्च को वहन करके अपनी आय को बढ़ा सकें।

उल्टे हमें तो सरकार की तरफ से सिर्फ दोहरापन ही दिखायी देता है। पहले तो सरकार ने बिना सोचे-समझे जनता की भलाई के नाम पर हर चीज पर एकाधिकार स्थापित किया, जिसके परिणास्वरूप हमें दशकों तक नगण्य विकास दर, दिनोंदिन बढ़ता भ्रष्टाचार आदि ही मिला। इसके बाद सरकार ने बिना सोच-समझे अरबों की सार्वजनिक सम्पत्ति को कौड़ियों के दाम पर कुछ लोगों के हाथों में बेच दिया। यह सब 'एफीसिएंसी' यानि कार्यकुशलता बढ़ाने के नाम पर किया गया। किन्तु सब प्रकार की सुविधाएं मिलने के बावजूद जब उन पूंजीपतियों ने यह कहकर हाथ खड़े कर दिये कि वे बिजली ग्रिड का संचालन नहीं कर सकते अथवा बेहतरीन रूट उपलब्ध

**शेष पृष्ठ 10 पर**

# हार्वर्ड : विविधतावादी जंगली !

हार्वर्ड। अर्थशास्त्र के प्रोफेसर डॉ. सुब्रमण्यन स्वामी विश्वविद्यालय में विवाद के केंद्र बना दिए गए हैं। प्रोफेसर स्वामी नियमित शैक्षणिक वर्ष के दौरान हार्वर्ड में शिक्षण के लिए अपने देश में राजनीति मे प्रवेश के लिए छोड़ दिया, लेकिन कैम्ब्रिज लौटने के लिए गर्मियों में पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए जारी रखा। इससे पहले इस साल, प्रोफेसर स्वामी ने भारतीय समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' में प्रकाशित मुस्लिम आतंकवादियों द्वारा मुंबई बम विस्फोट की प्रतिक्रिया में, भारत को आधिकारिक तौर पर एक हिंदू देश घोषित करने और कदम उठाने के लिए अपनी हिंदू पहचान को लागू करने की वकालत की।

हालांकि स्वामी ने खुद एक हार्वर्ड के प्रोफेसर के रूप में पहचान नहीं किया है।... ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय की खुशी में आबंटित कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के लिए प्रस्ताव को रद्द करने का अधिकार है। फिर भी, हार्वर्ड संकाय स्पष्ट रूप से एक बहुत बुरा फैसला किया। सबसे बुनियादी स्तर पर, एक नियोक्ता राजनीतिक पूरी तरह से नौकरी के लिए असंबंधित गतिविधियों के आधार पर एक कर्मचारी की निरंतरता के बारे में एक निर्णय कर रही है, वहाँ जो भी दावा है कि डॉ. स्वामी कुछ छात्रों को अनुचित होगा "शायद" के लिए कोई समर्थन किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय नियोक्ता का एक विशेष प्रकार का नैतिक दायित्व की रक्षा और बौद्धिक बहुलवाद को बढ़ावा देना है। एक विश्वविद्यालय में विचार आपत्तिजनक पाता है, rebutted होना चाहिए, खामोश; अपवर्जित या नहीं। लेकिन इस मामले में वास्तव में परिसर में विचारों की खुली अभिव्यक्ति से परे चला गया है। हार्वर्ड कला और विज्ञान संकाय मैसाचुसेट्स के अमेरिकी राज्य में, कार्रवाई करने के लिए अधिकारिक तौर पर भारत में एक अखबार में राजनीति के बारे में भारत में एक भारतीय नागरिक द्वारा प्रकाशित लेख का परित्याग करना।

मेरे खुद के कागज निशान के बारे में पता किसी ने मुझे बताया, अर्द्ध सूचित, और पूरी तरह से बेखबर सितारों के तहत और परे सब कुछ के बारे में राय और निर्णय पकड़ मैसाचुसेट्स मे या कहीं और व्यक्तियों के अधिकार को बनाए रखने के लिए उम्मीद करनी चाहिए। जब तक हम अमेरिका के संविधान की सुरक्षा का विस्तार अमेरिका के बाहर लोगों के लिए नहीं कर सकते हैं, मनुष्य के रूप में निश्चित रूप से

हमारे साथी किस प्रकार अन्य मनुष्यों को हर जगह और हर समय इलाज के बारे में चिंतित हो सकते हैं, लेकिन क्यों हार्वर्ड संकाय के संगठन, एक संस्थागत इकाई के रूप में, किसी भी व्यवसाय क्या भारतीयों के लिए भारत में राजनैतिक और सामाजिक सवालों पर स्वीकार्य या अस्वीकार्य राय है डॉ. स्वामी को हार्वर्ड से असम्बद्ध कर दिया गया?

http://www.themoralliberal.com/2011/12/13/harvard-cosmopolitans-gone-wild/

# नक्सलियों का असली चेहरा

गृह मंत्रालय द्वारा जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि **पिछले पांच सालों के दौरान नक्सली हिंसा में माओवाद प्रभावित पांच राज्यों के 260 से अधिक स्कूल ध्वस्त हुए हैं।**

यूनेस्को द्वारा जारी इसी प्रकार की एक अन्य रिपोर्ट, जिसमें विश्वभर के शिक्षा संस्थानों पर हुए हमलों का जिक्र है, में

साफ कहा गया है कि नक्सल प्रभावित राज्यों में अनेक शिक्षा संस्थानों को निशाना बनाया गया। सिर्फ जनवरी से जुलाई 2009 के बीच हुए हमलों का जिक्र करते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि अकेले झारखंड में ऐसे 11 तथा बिहार में 9 स्कूलों को ध्वस्त कर दिया गया।

गृह मंत्रालय की रिपोर्ट में कहा गया है कि सर्वाधिक स्कूलों पर छत्तीसगढ़ में हमले हुए। इसके बाद झारखंड का नम्बर आता है। छत्तीसगढ़ में जहां 131 स्कूलों पर हमले हुए वहीं झारखंड में 63 स्कूलों को निशाना बनाया गया। वर्ष 2006 से लेकर इस साल नवम्बर तक अकेले बिहार में 46 स्कूलों को निशाना बनाया गया।

वर्ष 2009 में नक्सल प्रभावित छह राज्यों में कुल 71 स्कूलों को निशाना बनाया गया। ये छह राज्य हैं–छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र, और आन्ध्र प्रदेश। इस प्रकार वर्ष 2006 में कुल 59 स्कूलों को निशाना बनाया गया, वहीं वर्ष 2007 में 43, वर्ष 2008 में 25, वर्ष 2010 में 39 और 211 में नवम्बर तक 21 स्कूलों पर हमले हुए हैं।

यूनेस्को ने अपनी रिपोर्ट में वर्ष 2009 के दौरान शैक्षिक संस्थानों पर हुए हमलों का जिक्र करते हुए कहा है कि नक्सल प्रभावित अकेले झारखंड और बिहार में इस दौरान 50 से अधिक स्कूलों को तोड़ा गया। रिपोर्ट में कहा गया है कि माओवादियों ने झारखंड के चौका में एक विद्यालय में काम करने वाले व्यक्ति पर हमला कर उसे बुरी तरह पीटा।

इसी प्रकार अप्रैल 2009 में झारखंड के मंदर में एक बालक को सिर्फ इसलिए प्रताड़ित किया गया, क्योंकि उसने नक्सलियों की बाल टोली में शामिल होने से इनकार कर दिया था। यूनेस्को ने कहा कि बिहार में चार स्कूलों को नक्सलियों द्वारा बम से उड़ाया गया।

( पी.एन.एस., नई दिल्ली, 7 दिसम्बर, 2011)

**पृष्ठ 8 का शेषांश.....**

कराने के बाजवूद एयरलाइन को नहीं चला सकते तो उसके बाद इन संस्थानों का न तो वापस राष्ट्रीयकरण किया गया और न ही उन्हें फिर से जीवित करने की कोशिश की गयी। उल्टे सरकार कोशिश यह करती है कि वह विशाल सार्वजनिक सम्पत्ति उन पूंजीपतियों की ही जेब में डाल दी जाए। यही कारण है कि आज हमारी अर्थव्यवस्था सरकार और बड़े कारपोरेट घरानों के बीच एक पिंग पोंग गेंद बनकर रह गयी है।

सरकार को पता है कि खुदरा बाजार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को स्थानीय किसानों से सीधे सौदा करने का मौका मिलेगा। जिसका परिणाम यह होगा कि हमारे किसान उन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की दया पर निर्भर हो जाएंगे, जो फूड चेन के मालिक होंगे। वे बहुराष्ट्रीय कंपनियां ही बाद में अनुबंध खेती की शर्तों को मनमाने ढ़ंग से तय करेंगी और बताएंगी कि माल तभी खरीदा जाएगा जब अमुक स्तर की गुणवत्ता मिलेगी। यदि किसान उस स्तर की गुणवत्तायुक्त चीजों का उत्पादन नहीं कर पाया तो उसके उत्पाद का क्या होगा?क्योंकि कैसी भी नयी तकनीक आ जाए फिर भी खेती तो प्रकृति पर ही निर्भर है। इसके अलावा ये कंपनियां इसलिए भी मनमानी शर्तें किसानों पर थोपेंगी ताकि वे अपना उत्पाद किसी भी सूरत में दूसरों को न बेच सकें। क्या यह बंधुआ होना नहीं है?इसके बाद कंपनियों का ही उत्पादों पर नियंत्रण होगा और कीमतें भी वे अपने लाभ को ध्यान में रखकर निर्धरित करेंगी।

कुछ समय पहले जयपुर में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी ने अंडे सप्लाई करने वाले 250 थोक व्यापारियों से प्रतिदिन पांच लाख अंडे सप्लाई करने का सौदा पक्का किया। सौदे में यह तय हुआ कि व्यापारी किसी भी सूरत में अपने अंडे किसी भी खुदरा व्यापारी को नहीं बेचेंगे और सारे अंडे सिर्फ कंपनी को ही बेचे जाएंगे। इसका परिणाम यह हुआ कि अंडे के कारोबार में पहले से लगे हॉकर तथा छोटे व्यापारी एक ही रात में बेरोजगार हो गये और मॉल्स में बिकने वाले अंडों की कीमतें भी दुगुना हो गयीं।

इसी प्रकार गुणवत्ता नियंत्रण के नाम पर बड़ी कंपनियां यह अधिकार अपने पास सुरक्षित रखती हैं कि यदि माल उनकी गुणवत्ता के अनुरूप नहीं हुआ तो वे माल नहीं खरीदेंगी। इससे भी खतरनाक बात यह है कि कंपनियां यह अधिकार भी अपने पास ही रखती हैं कि किसान खेत में कौनसा बीज बोएगा, कौन सी फसल उगाएगा, कौन सा खाद प्रयोग करेगा, आदि। इस प्रकार सौ साल पूर्व के चम्पारण स्टाइल में वे कंपनियां किसानों को आदेश देंगी कि वे खाद्यान्न पैदा करने की बजाएं सिर्फ 'कैश क्रॉप' यानि सब्जियां आदि ही उगाएं। इसके अलावा अपनी शर्तों पर बीज तथा खाद का उपयोग करवाकर वे जमीन की उत्पादन क्षमता को बर्बाद कर सकती हैं।

पिछले दिनों हुए कुछ अध्ययनों में यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो चुकी है कि 'कैश क्रॉप' यानि पैसा कमाने वाली फसलें किसानों के लिए बहुत जोखिम भरा सौदा है। याद कीजिए कपास उगाने वाले किसानों द्वारा की गयी आत्महत्या। इसके अलावा पैसा देकर खाने की प्रत्येक चीज बाजार से खरीदने से वे जो भोजन खाते हैं, उससे सम्पूर्ण परिवार की पौष्टिकता प्रभावित होती है। इसके अलावा कुछ समय बाद कंपनियां यह भी कह सकती हैं कि उनके मुनाफे के अनुसार सिर्फ कुछ विशेष प्रकार की फसलें ही उगायी जाएं। इसका दुष्परिणाम यह है हो सकता है कि कुछ खाद्यान्न तो बहुतायत में मिल सकते हैं किन्तु पौष्टिकता के लिए आवश्यक दूसरे खाद्यान्न बाजार में नहीं मिलेंगे। इससे फसलों की विविधता भी प्रभावित होगी।

किसानों के साथ मिलकर जो अनुबंध खेती होगी, उसका एक पक्ष यह है कि इसमें कंपनी किसानों को पैसा उपलब्ध कराएंगी। इसका परिणाम यह हो सकता है कि यदि किसान उनके अनुरूप फसल कंपनी को नहीं दे पाया और पैसा वह अपने पारिवारिक कामों तथा फसल के लिए खर्च कर लेता है तो उत्पादन के अभाव में वह कंपनी को पैसा कैसे लौटाएगा?फिर उसके पास आत्महत्या के अलावा दूसरा उपाय नहीं बचेगा।

खुदरा व्यापार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को अनुमति देने का मतलब है बहुराष्ट्रीय कंपनियों को यह ताकत प्रदान कर देना है कि उत्पादन संबंधी सभी प्रकार के जोखिम पहले से ही असुरक्षित छोटे किसानों पर डाल दें,

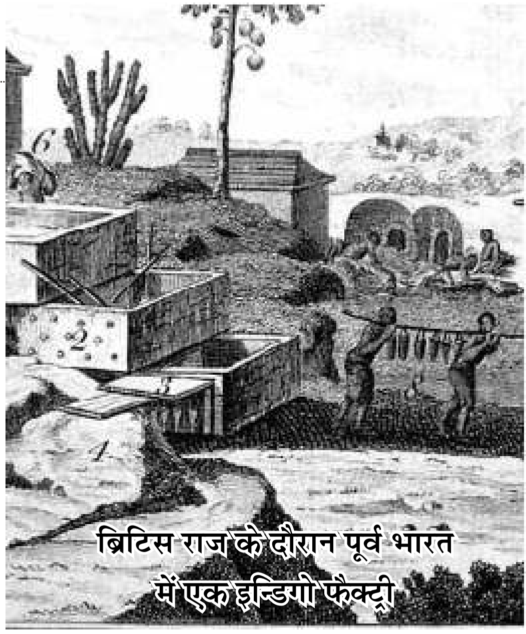

ब्रिटिस राज के दौरान पूर्व भारत में एक इन्डिगो फैक्ट्री

किन्तु मुनाफे पर पूरा नियंत्रण कंपनियों का ही रहेगा। **इससे वैसी ही स्थिति पैदा होगी जैसी अंग्रेज सरकार के दौरान अफीम पैदा करने वाले किसानों की होती थी।**

कॉरपोरेट कल्चर को बढ़ावा देने का यह दुष्परिणाम हो सकता है। यह इसलिए भी अवश्यंभावी दिखता है क्योंकि उस स्थिति में देश का जो ग्रोथ इंजन होगा, उसमें गली–कूचे के हॉकरों के प्रति किसी प्रकार की दया भावना नहीं होगी। किन्तु वे किसी भी सूरत में हमारी जिंदगी से अलग नहीं हो सकते हैं। यह ठीक वैसे ही है कि सरकार बड़ी कंपनियों को या फिर अमीरों को मकान बनाने के लिए जमीन सस्ते में उपलब्ध कराती है किन्तु गरीबों की उतनी चिंता नहीं करती। इसका दुष्परिणाम यह होगा कि गरीब और गरीब होंगे और गली कूचे के हॉकरों को जीने के लिए अपने घर के बर्तन बेचने पड़ेंगे। लेकिन यह काम भी एक ही बार हो सकता है। इसके बाद किसान या तो अपने उत्पाद सड़कों पर बिखेरने के लिए बाध्य होंगे अथवा खुद ही नगरपालिका की गाड़ियों में भरकर कूड़ेघर तक भिजवाएंगे। अभी हाल ही की घटना है जब दिल्ली के सरोजनी नगर बाजार से हॉकरों को भगा दिया गया। जबकि वे उस बाजार का अभिन्न हिस्सा थे और उनसे माल खरीदना दिल्ली ही नहीं बल्कि बाहर से आने वाले लोगों के लिए भी एक यादगार अनुभव होता था। वे जो माल बेचते थे वह बड़ी दुकानों में मिलने वाले वैसे ही माल से काफी सस्ता होता था।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और खेती से आय पर आगे और चर्चा करने से पूर्व

# झुर्रियों से दूर रख सकता है योग

*झुर्रियों से मुक्ति तो हम सब चाहते हैं; लेकिन आज की लाइफ स्टाइल में यह इतना आसान नहीं होता। व्यस्त दिनचर्या में हम सिर्फ खानपान को थोड़ा बेहतर करके और थोड़ी एक्सरसाइज करके हमेशा खूबसूरत दिखना चाहते हैं। लेकिन यह संभव हो नहीं पाता। दरअसल प्राकृतिक खूबसूरती और झुर्रियों से मुक्त त्वचा बिना योग के संभव नहीं।*

*– सुनील सिंह, योगगुरु*

हर किसी की इच्छा होती है कि वे हमेशा सुंदर दिखें और स्वस्थ रहें लेकिन आज की लाइफस्टाइल में प्राकृतिक सुंदरता जल्दी ही हमसे दूर जाने लगती है। सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से सुंदर दिखने की कोशिश भी हमारे चेहरे को झुर्रियों से बचा नहीं पाती। ऐसे में हम सोचने लग जाते हैं कि क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है जो हमारी प्राकृतिक सुंदरता को लम्बे समय तक बनाए रख सके और हम झुर्रियों से दूर रहें। योग हमें ऐसे उपाय बताता है, जिससे हम अपनी खूबसूरती को चिर समय तक बनाए रख सकते हैं। खानपान का थोड़ा ख्याल रखते हुए योग की कुछ विधियों का अभ्यास कर हम लम्बे समय तक झुर्रियों से दूर रह सकते हैं। खासकर कपोल शक्ति विकासक क्रियाएं, सिंहासन योग मुद्रा, सुप्त वज्रासन, मत्स्यासन और कपालभाति प्राणायाम बहुत ही लाभदायक होते हैं।

**सिंह आसन की विधि** – वज्रासन में बैठक घुटनों को थोड़ा खोलकर रखें। हाथों की अगुंलियां पीछे की ओर करके पैरों के बीच सीधा रखें।

**क्रमशः**

## सुभाषित

**निधानं सर्वरत्नानां हेतुः कल्याणसम्पदाम्।**
**सर्वस्या उन्नतेः मूलं महतां संग उच्यते।।**

**(रश्मिमाला, 38.1)**

संसार में महान् पुरुषों का संग सभी मूल्यवान् पदार्थों का आश्रय है तथा सम्पूर्ण कल्याणरूपी सम्पत्ति तथा सभी तरह की उन्नति का मूल है। तात्पर्य है कि सज्जनों का संसर्ग प्राप्त होना जीवन में बहुत बड़ी बात है।

## बादाम काजू सूप

**सामग्री** – बादाम – 10, काजू – 5, लहसुन – 4 कली, सफेद प्याज – 1/2, काली मिर्च – स्वादानुसार, दूध – 1/2, नमक – स्वादानुसार, मकई का आटा – 1 चम्मच।

**विधि** – बादाम को गर्म पानी में 10 मिनट तक डुबोकर रखें और उसके बाद बादाम के छिलके उतार दें। कड़ाही गर्म करें और उसमें बारीक कटे लहसुन और प्याज को भूनें। भूनने के बाद इन्हें बादाम, काजू और थोड़े से दूध के साथ ग्राइंडर में डालकर पेस्ट तैयार कर लें। अब एक कप में मकई के आटे को डालें और दो चम्मच पानी डालकर उसका पेस्ट तैयार कर लें।

एक बर्तन में काजू–बादाम वाला पेस्ट, नमक आवश्यकतानुसार पानी, दूध और नमक व काली मिर्च डालकर उबालें। जब यह मिश्रण उबलने लगे तो उसमें मकई के आटे का पेस्ट भी डालें। धीमी आंच पर लगातार चलाती रहें। जब मिश्रण अच्छी तरह से उबल जाए, तब उसे गर्मागर्म सर्व करें।

---

एक और बिन्दु पर विचार करना बेहतर होगा। **1950 के दशक में अमेरिका में औसतन किसान की आय 70 प्रतिशत थी जो बाद में कंपनियों के आने बाद तथा बिचौलियों के हट जाने के बाद बढ़ने की बजाए मात्र तीन से चार प्रतिशत रह गयी। हुआ यह कि बिचौलियों के पास मिलने वाले पैसे को कंपनियां ही हड़प गयीं और किसानों को इसका कोई फायदा नहीं हुआ।**

भारत के खुदरा बाजार में विदेशी निवेश का फायदा सिर्फ पश्चिमी देशों की उन बड़ी कंपनियों को ही होगा, जिनके लिए पश्चिमी देशों का बाजार अपने चरम पर पहुंच चुका है और वहां से अब वे और अधिक पैसा नहीं कमा सकती। किन्तु यह सब जानते हुए भी यह बात समझ में नहीं आती कि आखिर हमारी भारत सरकार क्यों जानबूझकर अपने किसानों तथा खुदरा बाजार में लगे करोड़ों लोगों को मौत के मुंह में धकेल रही है?

(6 दिसम्बर, 2011)

**पृष्ठ 07 का शेषांश.....**

जांचकर्ताओं ने जब इंडियन मुजाहिददीन के इस नये नेटवर्क का पर्दाफाश किया तो इस इस संबंध में चेन्नई, दिल्ली और दूसरे स्थानों पर हुई सभी गिरफ्तारियों में एक ही समानता पायी गयी कि ये सभी उत्तर बिहार के रहने वाले हैं। इस नेटवर्क का सरगना था–यासिन भटकल उर्फ यासीन अहमद सिद्दबप्पा जो तटीय कर्नाटक के शहर भटकल का रहने वाला है और पिछले कुछ सालों से दिल्ली में रह रहा था। अब जांचकर्ता इस बात की जांच में जुटे हैं कि कहीं भटकल ने ऐसे ही अन्य समुदायों अथवा क्षेत्र के लोगों का साथ लेकर भी ऐसे ही किसी अन्य आतंकी समूह का गठन तो नहीं किया है।

जांच एजेंसियों को नहीं लगता कि भटकल देश से भागने में कामयाब हो गया होगा। इसलिए वे उसे अलग–अलग स्थानों पर तलाश रहें हैं। भटकल अलग–अलग नामों से रहता है और अपनी जगह बदलता रहता है। दिल्ली में उसने हथियार बनाने की एक वर्कशाप खड़ी की और यहीं की एक लड़की से शादी भी की। बताया जाता है कि तीन आतंकी हमलों में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रह चुकी है।

– जे. जोसेफ (टी.एन.एन, नई दिल्ली, 7 दिसम्बर, 2011)

# वीर शंभुधन फुंगलो

शंभुधन फुंगलो का जन्म 1850 में लंकर माइवांग (असम) में देपेन्द्राओ फुंगलो के पुत्र के रूप में हुआ था। असम नागा हिल्स के क्षेत्र में अंग्रेजों ने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति से डिमासा और कछारी राज्यों को छिन्न–भिन्न कर दिया। अंग्रेजों की इस नीति ने शंभुधन फुंगलों को अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष छेड़ने को बाध्य कर दिया। वह लम्बे कान तथा काली आंखों वाला लम्बे कद का पाठा जवान था। शिव भक्त भी था। उसने अनेक क्षेत्रों का भ्रमण करके 20–20 युवाओं को संगठनों में विभक्त कर दिया। माई बांग में रणचण्डी मंदिर के निकट क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर दिया।

1942 के 'अंग्रेजो ! भारत छोड़ो' आंदोलन से 60 वर्ष पूर्व ही 1882 में शंभुधन ने घोषणा कर दी–''अरे ओ सफेद चमड़ी वाले बुलबुलो...हमारे देश की पवित्र मिट्टी का अविलम्ब परित्याग कर दो........'' अंग्रेजों को गुप्तचरों से शंभुधन की गतिविधियों का पता चल गया। उसे गिरफ्तार करने हेतु छः सिपाही भेजे गए। लेकिन उसके नाम से ही शत्रुओं में इतनी घबराहट थी कि सिपाही उसे गिरफ्तार किए बिना मार्ग से ही वापस लौट गए। इसका परिणाम यह हुआ कि शंभुधन ने अपनी किलेबंदी और अधिक मजबूत कर ली।

मेजर बोयाड ने उसके शिविरों पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में मेजर बोयाड मारा गया। अंग्रेज सेना ने भाग कर जान बचाई। शंभुधन ने बराक नदी के किनारे सिद्धेश्वर मंदिर, हारंगाजाओ की शिव बाड़ी, काराकारी की शिव बाड़ी, हाइला कांदी का देवी मंदिर आदि मंदिरों में अपने युद्ध शिविर स्थापित किए हुए थे। एक बार ब्रिटिश सैनिकों ने इग्रालिंग में विश्राम करते हुए उसे घेर लिया।

पारम्परिक स्रोतों से उपलब्ध जानकारी के अनुसार **13 जनवरी, 1883** को वीर शंभुधन फुंगलो ब्रिटिश सैनिकों से जूझते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

**'स्वतंत्रता सेनानी सचित्र कोश' से**

---

# महत्वपूर्ण है हृदय

**– स्वामी विवेकानन्द जी**

वेदान्त के नीतिशास्त्र के इन सभी विचारों को और भी विस्तृत रूप से कहना पड़ेगा। अतएव थोड़ा सा धैर्य रखना आवश्यक है। पहले ही कह चुका हूं कि हम लोगों को इसका विस्तृत निरूपण करना पड़ेगा और यह भी देखना है कि किस प्रकार यह आदर्श निम्नतर आदर्शों से क्रमशः विकसित हुआ है और किस प्रकार पूरा एकत्व का आदर्श धीरे–धीरे विकसित होकर विश्व प्रेम में परिणत हो गया है।

दुनिया तो धीरे–धीरे निम्नतम आदर्श से ऊपर उठने के लिए रुकी नहीं रह सकती, किन्तु हमारे ऊंचे सोपान पर चढ़ने का फल ही क्या, यदि हम यह सत्य बाद में आनेवाली पीढ़ियों को न दे सकें ?इसलिए इसकी आलोचना हमें विशेष रूप से विस्तारपूर्वक करनी होगी और प्रथमतः उसके बौद्धिक पक्ष को स्पष्ट करना परम आवश्यक है, यद्यपि हम जानते हैं कि बौद्धिकता का विशेष मूल्य नहीं; हृदय ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। हृदय के द्वारा ही भगवत्साक्षात्कार होता है; बुद्धि के द्वारा नहीं। बुद्धि केवल जमादार के समान रास्ता साफ कर देती है–वह गौण सहायक है, पुलिस के समान है–किन्तु समाज के सुन्दर परिचालन के लिए पुलिस की सकारात्मक आवश्यकता नहीं होती। उसका कार्य उपद्रव रोकना और अन्याय निवारण करना है। बुद्धि का कार्य भी इतना ही है।

जब तुम बौद्धिक पुस्तकें पढ़ते हो तब उन पर अधिकार कर लेने पर तुम यही सोचते हो कि 'ईश्वर को धन्यवाद है, मैं उनके बाहर निकल आया' इसका कारण यह है कि बुद्धि अंधी है, उसकी अपनी गतिशक्ति नहीं है, उसके हाथ–पैर नहीं हैं, भावना ही वास्तव में कार्य करती है, उसकी गति बिजली अथवा उससे भी अधिक वेगवान पदार्थ की अपेक्षा श्रेष्ठ होती है। अब प्रश्न यह है कि क्या तुम्हारे भावना है ?यदि है तो तुम ईश्वर को देखोगे।

आज तुम्हारी जितनी भी भावना है वही प्रबल होती जायेगी–देवभावापन्न होती रहेगी, उच्चतम भूमिका में प्रतिष्ठित होगी और अन्ततः वह हर वस्तु का अनुभव करेगी, हर वस्तु में एकत्व, स्वयं में तथा हर अन्य वस्तु में ईश्वर का अनुभव करने लगेगी। बुद्धि यह नहीं कर सकती। शब्दों के प्रयोग के विभिन्न तरीके, शास्त्रव्याख्या की विभिन्न शैलियां केवल पण्डितों के लिए हैं; हमारे लिए नहीं, आत्म की मुक्ति के लिए नहीं।

(साभार : व्यावहारिक जीवन में वेदान्त, रामकृष्णमठ, नागपुर)

**युगनायक स्वामी विवेकानन्द जी जयन्ती – 12 जनवरी पर**

**"शक्ति, पौरुष, क्षात्रवीर्य और ब्रह्मतेज हमारे सुन्दर एवं होनहार युवकों के पास ये सब चीजें होनी चाहिए"**

# स्वामी रामानंदाचार्यजी (काशी)

**सन् 1400 से 1500 ई0 के मध्य**

**जाएँ मंदिर से घंटे निकल।
नमाजों में पड़ता है खलल।।
शाह तुगलक कि मेष का मंद।
हुए यति–गति विरहित से छंद।
शरण रामानंदाचार्य की,
बिलखते पहुंचे अगणित हिन्दु।
सगर–कुल–मुक्ति ब्याज, जग हेतु,
रिस चला ब्रह्म–पात्र से बिंदु।
निशि–दिन लगीं गूंजने मस्जिद,
शंख–मृदंग स्वरों से।
'करें गुनाह मुआफ', गिरे पद,
काजी निकल घरों से।।
भाव तेल का लुब्ध
पतंगों को बतलाने आया।
मैं संझा–झंझा भरी दीप्त
मध्याह्न बनाने आया।**

स्वामी रामानंदाचार्य जी सैद्धांतिक दृष्टि से श्री रामानुजाचार्य जी के विशिष्टाद्वैत मत के हैं। कर्मकाण्ड की दृष्टि से स्वामीजी ने उसे और सरल बनाकर **'रां रामाय नमः'** मंत्र बिना भेदभाव के सभी को प्रदान किया। सेन नाई, पीपाजी, कबीर जी आदि ने उन्हीं से मंत्र ग्रहण किया। धर्मरक्षा के लिए उन्होंने बैरागी साधुओं की एक श्रेणी का निर्माण किया। इनके हाथों के भारी चिमटे जो कीर्तन में वाद्य का और संकट के समय सांघातिक शस्त्र का कार्य करते हैं। बैरागियों ने अनेक बार उनसे विधर्मियों का मान मर्दन किया।

एक बार तुगलकी बादशाहों ने फर्मान जारी किया कि 'सभी मंदिरों से घंटे हटा दिए जायें। क्योंकि इनके कारण नमाजों में खलल पड़ता है।' स्वामीजी ने अपने योग–बल के द्वारा ऐसा चमत्कार उत्पन्न किया कि काशी की प्रत्येक मस्जिद हर समय

शंख–मृदंग–घंटों की ध्वनि से गूंजने लगी। बाध्य होकर बादशाह को अपना आदेश वापिस लेना पड़ा। स्वामीजी के विषय में प्रसिद्ध है कि –भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाए रामानंद।'

**आचार्य सोहनलाल रामरंग
कृत 'भरत भूमि का भाट' से**

जन्म : पौष शु. 6, 1666 वि.
16 जनवरी, 1913 ई0 फखरपुर (गया-बिहार)
गोलोक : 13 अक्टूबर, 1962 ई0 (गोरखपुर)

# श्रीराधा बाबा

**गोपिका महाभाव के गेह।
काष्ठ छवि जगन्नाथ सी देह।।
स्नेह के हस्ताक्षर साकार।
किंतु लिपिज्ञान रहित संसार।।
न जाने किसने कितना पढ़ा,
बात व्याख्या की करता कौन।
अहर्निश लहर गुंजाती गगन,
उसी दधि का अंतरतम मौन।।
राधारंग रँगी
माधव–मणि–आभा राधा बाबा।
रससरि धार मँझार महत्
मंदारक मंजु दुआबा।।
शुद्ध स्नेह अद्वैत–द्वैत
संगम पर न्हाने आया।
मैं गंग–सिंधु संक्रांति पर्व का
चित्त लुभाने आया।।**

(कृपया देखें–हिन्दू विश्व' अप्रैल1–15
तथा अक्टूबर 1–15, 2011)

**जयन्ती वर्ष पर विशेष**

## मासानुसार दान : माघमास

माघमास स्नान, दान, पूजन तथा नाम जप एवं सत्संगपूर्वक रात्रिजागरण का मास है। सभी दानों के लिए माघमास अत्यन्त प्रशस्त है। गंगादि पुण्यतोया नदियों के तटपर कुम्भ आदि पर्व इसी मास में पड़ते हैं। अतः कल्पभर (मासभर) दान–ही दान होता है। मकर संक्रांति, षट्तिला एकादशी, मौनी अमावास्या, वसंतपंचमी, अचलासप्तमी, माघीपूर्णिमा इस मास के मुख्य पर्व हैं, कल्पभर के स्नान के बाद विशेष दान–पुण्य की परम्परा है। माघमास में प्रतिदिन घृत, नमक, हल्दीसहित और तिल–गुड़ से बने लड्डू के साथ खिचड़ी तथा लड्डू दान के मंत्र इस प्रकार है –

**कृशरं सर्वशीतघ्नं शनिप्रीतिकरं सदा। तस्मादस्य प्रदानेन मम सन्तु मनोरथाः।।
सतिलं गुड़संयुक्तं रसप्रीतिकरं नृणाम्। वर्धितं संगृहाणेदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।**

विशेष करके माघ की अमावस्या या पूर्णिमा अथवा सामर्थ्य होने पर पूरे मासभर प्रतिदिन अग्नि और ईंधन (लकड़ी) के दान से महाफल होता है। साथ ही इस मास में तिल, तिलधेनु, कृशरान्न (खिचड़ी) पान, गुड़, ईंधन, अग्नि, ऊनी वस्त्र आदि का दान किया जाता है।

# केन्द्र सरकार के संविधान विरोधी कार्यों का विरोध करने का आह्वान

सिरसा (हरियाणा), 4 दिसबर। 'देश के राजनेता वोट बैंक की राजनीति में देशहित को ही भूल रहे हैं। संविधान में मजहब आधारित आरक्षण पर प्रतिबंध के बावजूद वर्तमान केन्द्र सरकार मुस्लिमों को पिछड़ा वर्ग के 27 प्रतिशत आरक्षण में से 6 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा कर रही है। यह देश के संविधान की भावना के विपरीत है तथा इस देश के 80 प्रतिशत हिंदु युवाओं के साथ धोखा है। विश्व हिन्दू परिषद ऐसे किसी भी संविधान विरोधी कार्य का डटकर विरोध करेगी।'

विश्व हिंदू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय महामंत्री डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया ने उक्त उद्गार त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम में व्यक्त किये।

विश्व हिन्दू परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष कांति लाल सैनी, इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र के संगठन मंत्री कैलाश सिंहल, विभागाध्यक्ष बृजमोहन शर्मा, बजरंग दल के प्रांतीय संयोजक सुरेश वत्स और विहिप के प्रदेश मंत्री विजय शर्मा भी उपस्थित थे।

इससे पूर्व स्थानीय नेहरू पार्क में बजरंग दल द्वारा आयोजित **राष्ट्र रक्षा संकल्प समारोह** में डॉ. तोगड़िया ने कहा कि देश में हिंदुओं की रोजी–रोटी, बेटी छीनने की साजिश की जा रही है। प्रधानमंत्री एफडीआई मामले में देश को गुमराह कर रहे हैं क्योंकि प्रधानमंत्री कहते हैं कि इससे लगभग एक करोड़ लोगों को रोजगार मिलेगा। जबकि इससे देश में बेरोजगारी बढ़ेगी। किसान, मजदूर और व्यापारी पूरी तरह से बर्बाद हो जाएंगे। विदेशी कम्पनियों के आने से प्रत्येक वर्ग प्रभावित होगा।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रनीति देश को जोड़ती है और राजनीति देश को तोड़ती है। देश का भविष्य युवाओं पर टिका है। ऐसे में युवाओं का मार्गदर्शन करने की आवश्यकता है।

hjvijayksharma40@gmail.com

# सोशल साइट्स पर प्रतिबंध (?) सरकार की दोहरी नीति

**–डा. प्रवीण तोगड़िया**

केन्द्र सरकार द्वारा हाल ही में सोशल नेटवर्किंग साइट्स तथा ईमेल साइट्स पर प्रतिबंध लगाने की कोशिशों पर टिप्पणी करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री डॉ. प्रवीण तोगड़िया ने इसे संप्रग सरकार का दोहरापन करार दिया।

नई दिल्ली में 6 दिसम्बर को जारी एक बयान में उन्होंने कहा, ''यद्यपि केन्द्रीय दूरसंचार मंत्री ने अपने बयान में यह स्पष्ट नहीं किया है कि आखिर अचानक किस मजहब की भावनाओं को इंटरनेट अथवा सोशल साइट्स के माध्यम से ठेस पहुंची है, किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि आज एक खास महजब के मानने वालों का त्यौहार है और पिछले कुछ दिनों से इंटरनेट पर दिखायी गयी कुछ तस्वीरों के कारण इस खास मजहब के लोगों ने हिंसक उत्पात मचाया है। उन्होंने महाराष्ट्र के अकोला में कुछ हिन्दुओं की दुकानों को जला दिया और राजस्थान के डुंगरपुर में कुछ हिन्दुओं को घायल भी किया। अन्य स्थानों पर भी इस प्रकार की अनेक घटनाएं हुई हैं।

डॉ. तोगड़िया ने कहा कि इस सरकार के साथ सबसे बडी समस्या यह है कि जब सनातनी हिन्दुओं, जैनियों, सिखों आदि की भावनाओं को आहत किया जाता है तो यह कभी नहीं कहती कि यह गलत हुआ और उपद्रवियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाए। किन्तु, दूसरी तरफ हिन्दुओं की भावनाओं को आहत करने वाले एम.एफ. हुसैन जैसों को रातों रात 'नेशनल हीरो' बना दिया जाता है। ऐसे लोगों का 'हिन्दू कट्टरपंथियों के हमलों का शिकार' बताकर बचाव किया जाता है। आज अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर हिन्दुओं की भावनाओं को बार–बार ठेस पहुंचायी जाती है और जब वे शिकायत करते हैं तो उल्टे उन्हें ही प्रताड़ित किया जाता है। जब हिन्दुओं के देवताओं और भगवान की आपत्तिजनक अवस्था में तस्वीरें बनायी जाती हैं तो यही सरकार हिन्दुओं का ही मजाक बनाकर उन पर हंसती है। किन्तु आज वोट बैंक की चिंता में यह सरकार सोशल साइट्स पर भी प्रतिबंध लगाने का दुस्साहस करने की कोशिश कर रही है। सरकार का यह प्रयास अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए है।

उन्होंने कहा कि भले ही मंत्री महोदय यह कह रहे हों कि वे यह कदम धार्मिक भावनाओं के मद्देनजर उठा रहे हैं किन्तु हिन्दू समाज को सरकार की इस मंशा पर बिल्कुल भरोसा नहीं है। जब यह सरकार धर्म की बात करती है तो वह सिर्फ अल्पसंख्यक की ही बात करती है और यह अनेक बार साबित हो चुका है।''

**प्रस्तावित साम्प्रदायिक हिंसा...विधेयक–2011 के विरूद्ध**

**मुलाबागिलू– कोलार (कर्नाटक)** में हिन्दू हित रक्षण वेदिके, कर्नाटक के तत्वावधान में विहिप–संघ द्वारा आयोजित रैली में एक हजार से ज्यादा लोग सहभागी हुए। हिन्दू जागरण वेदिके, बंगलौर के नेता डी. केशवमूर्ति ने प्रस्तावित विधेयक को राष्ट्रीय एकता के लिए घातक बताया।

# माता महाकाली मंदिर की जमीन की नीलामी स्थगित

हैदराबाद के निकट एक गांव में स्थित उप्पुगुडा माता महाकाली मंदिर बहुत प्रसिद्ध मंदिर है, जहां बड़ी संख्या में भक्त आते हैं। इस मंदिर की स्थापना 1869 में उस समय हुई थी, जब वहां बड़े स्तर पर प्लेग की महामारी फैली थी, जिसमें हजारों लोगों की जानें गयीं थी। लोगों ने इसे माता महाकाली का कोप माना और माता महाकाली को शान्त करने के लिए उस उन्होंने 'बोनलू' यानि माता को भोजन अर्पण करने का एक उत्सव आरम्भ किया।

यह उत्सव आज भी जारी है। इस उत्सव में महिलाएं घर पर भोजन तैयार करके उसे विशेष रूप से विभिन्न रंगों, नीम की पत्तों, तथा दीयों से सजे एक मिट्टी के पात्र में रखती हैं और उस पात्र को अपने सिर पर रखकर श्रद्धापूर्वक मंदिर में जाती हैं तथा माता को वह भोजन अर्पित करती हैं। माता को भोजन अर्पण करने की यह परम्परा आज भी जारी है और प्रतिवर्ष बहुत बड़ा उत्सव होता है। वर्ष 2011 में महाकाली बोनलु जत्थे का आयोजन आषाढ़ मास यानि 15 से 25 जुलाई तक आयोजित हुआ।

1949 में जीर्णोद्धार के बाद इस मंदिर में माता महाकाली की एक भव्य प्रतिमा स्थापित की गयी। धीरे–धीरे इस गांव की आबादी बढ़ती गयी और अब यह डेढ़ लाख से ऊपर पहुंच गयी है। गांव में ही अब अनेक मोहल्ले स्थापित हो गये हैं–शिवाजीनगर, तानाजीनगर, नारायणहरिनगर, ललितबाग, भायलालनगर, अरुंधती आदि। बोनलु जत्थे में प्रतिदिन न केवल इन मोहल्लों से बल्कि राज्य के विभिन्न स्थानों से आए हजारों भक्त शामिल होते हैं।

एक समय इस मंदिर के पास 100 एकड़ से अधिक जमीन हुआ करती थी। किन्तु, धीरे–धीरे उस पर अवैध कब्जा होता गया और आज वह मुश्किल से 7. 23 एकड़ ही बची है। आज कोई यह बताने को तैयार नहीं है कि आखिर बची हुई 92.77 एकड़ जमीन कहां चली गयी और किसने हड़प ली। किन्तु माता के भक्तों को उस समय बड़ा आघात लगा जब आन्ध्र प्रदेश के धर्मदाय विभाग यानि एंडोमेंट डिपार्टमेन्ट ने ही इस बची हुई 7.23 एकड़ जमीन की नीलामी करने की भी योजना बना डाली।

वैसे तो नीलामी की यह योजना काफी पहले बन चुकी थी और बीच–बीच में नीलामी की कोशिशें होती रहती थी किन्तु स्थानीय समाज के विरोध के कारण वह सफल नहीं हो पाती थी। ऐसा ही एक प्रयास वर्ष 2003 में हुआ जब नीलामी की कोशिश की गयी। किन्तु उसमें भी सरकार सफल नहीं हो सकी।

ऐसी ही एक कोशिश इस साल नवम्बर के तीसरे सप्ताह में की गयी। नीलामी की चर्चा समाचार पत्रों में होने लगी। समाचार पत्रों में इस जमीन की कीमत 50 करोड़ आंकी गयी, किन्तु जो लोग जमीन की बोली लगाकर इसे हथियाना चाहते थे, उन्होंने इसकी कीमत मात्र छह करोड़ ही आंकी। इसलिए राज्य के एंडोमेंट विभाग ने 2 दिसम्बर को इस नीलामी को तीन महीने के लिए स्थगित करने की घोषणा की।

इस नीलामी को रोकने में हिन्दू देवालय परिरक्षण समिति के अध्यक्ष श्री कमल कुमार स्वामी की महती भूमिका रही। पहले उन्होंनें मंदिर के आसपास रहने वाले भक्तों को जागरूक किया और साथ ही महाकाली मंदिर बोर्ड के कुछ सदस्यों से भी सम्पर्क किया। इसके अलावा उन्होंने हिन्दू मंदिरों की सुरक्षा तथा उनकी जमीन आदि के लिए संरक्षण के लिए समर्पित संस्था ग्लोबल हिन्दू हेरिटेज फाउंडेशन से भी मदद मांगी। इसके बाद उन्होंने श्री पोन्नल लक्ष्मैया गुरु से भी सम्पर्क किया, जिन्होंने नीलामी को रुकवाने के लिए काफी सक्रिय भूमिका निभायी।

dharmarakshana@savetemples.org

## मंगलौर में जनसभा

### 'साम्प्रदायिक हिंसा विधेयक अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के उद्देश्य से है'

मंगलौर (कर्नाटक), 24 नव.। हिन्दू हितरक्षण वेदिके के तत्वावधान में प्रस्तावित साम्प्रदायिक और लक्षित हिंसा विधेयक–2011 की रोकथाम के लिए नेहरु मैदान में एक रैली और जनसभा आयोजित की गई। रैली में विभिन्न मठों के संतों, विहिप, संघ व अन्य हिन्दू संगठनों के प्रमुख नेता मौजूद थे। पुलिस के अनुमान के मुताबिक 20 हजार से ज्यादा लोग जिनमें कॉलेजों के छात्रों की बहुतायत थी, ज्योति सर्किल से नेहरु मैदान तक पहुंचे।

वेदिके–प्रान्त संगठन प्रमुख मुनियप्पा ने विधेयक को देशद्रोही विधेयक की संज्ञा देते हुए इस कानून के रूपान्तरण को रोकने की मांग की। विहिप के प्रान्त उपाध्यक्ष एम. बी. पुराणिक ने आरोप लगाया कि विधेयक का प्रारूप अल्पसंख्यक समुदायों को खुश करने के लिए लाया जा रहा है। विधेयक के दायरे के भीतर दलितों को लाकर हिन्दू समाज को तोड़ने के कोशिश की जा रही है।

वज्रदेही मठ के श्री श्री श्री राजशेखरानन्द स्वामीजी ने कहा कि हम (हिंदुओं) नहीं चाहते कि यह विधेयक संसद के शीतकालीन सत्र में प्रस्तुत किया जाय। स्वामी जी ने कहा कि विधेयक के अनुसार एक पुलिस निरीक्षक हिंदुओं की शिकायतों को पंजीकृत नहीं करेगा अपितु उन्हें (हिन्दुओं) जेल में बंद कर देगा। संघ के के. प्रभाकर भट्ट ने कहा कि हम (हिंन्दू) यह विधेयक पारित नहीं करने देंगे। (हिन्दू, मंगलौर)

आ.पृ. 2 का शेषांश.....

भले ही वे वामपंथी क्यों न हों, अपने मजहब को मानने वालों के हितों की रक्षा के लिए सदैव जागरूक और प्रयासरत रहते हैं।

केरल में हिन्दू लगातार गरीब होते जा रहे हैं। उनकी सारी जमीनें मुसलमानों और ईसाइयों द्वारा खरीदी जा रही हैं। मुसलमान सबसे ऊंची बोली लगाकर जमीनें कब्जिया रहे हैं तो ईसाई विदेशों से आ रहे धन–बल पर उनकी जमीनें हथिया रहे हैं। केरल के अधिकतर बड़े उद्योगपति ईसाई हैं और हिन्दू उनके यहां नौकरी करते हैं। दूसरे, नकली नोटों तथा विदेशी पैसे के बल पर भी हिन्दुओं को कुचला जा रहा है।

सरकार की भी यही सोच रहती है कि उसका मुख्य काम राज्य के अल्पसंख्यकों के कल्याण की चिंता करना है। पलोली समिति की रिपोर्ट को जिस शीघ्रता से लागू किया गया, उससे यही आभास होता है। इसके अलावा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की इकाई भी शीघ्र ही राज्य में स्थापित की जाने वाली है। मुस्लिम लड़कियों को प्रतिमाह मोटी छात्रवृत्ति मिलती है। लेकिन हिन्दू अनुसूचित एवं जनजाति युवतियों को जो एकमुश्त छात्रवृत्ति मिलती है, वह बहुत ही कम है। यही नहीं मुल्ला मौलवियों को उनकी सेवाओं के लिए वेतन तथा सेवानिवृत्ति के बाद पेंशन भी दी जा रही है।

इस संबंध में भारत के प्रधानमंत्री का वह बयान याद आता है जिसमें उन्होंने कहा था कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है। इसका मतलब है कि देश का प्रधानमंत्री भी मुसलमानों को लेकर ही चिंतित है न कि सभी देशवासियों के लिए।

हिन्दुओं को सब जगह नजरअंदाज किया जा रहा है। एक तरफ तो हज यात्रा पर जाने वालों को मोटा अनुदान दिया जाता है और दूसरी तरफ सबरीमला यात्रा के दौरान केरल राज्य परिवहन निगम हर साल बस किराये में वृद्धि कर देता है। सबरीमला तीर्थयात्रियों को यात्रा के दौरान अनेक प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। सुविधाएं देना तो दूर सरकार उल्टे उनसे टोल टैक्स वसूलती है। सबरीमला में विकास को लेकर हिन्दू समाज की ओर से जो भी निवेदन सरकार से किया जाता है, उसे हर बार अनसुना कर दिया जाता है। पिछले साल सबरीमला में जो हादसा हुआ, उसे भी सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया।

इसके अलावा मुसलमानों की ओर से 'लव जेहाद' अब हिन्दू समाज को समाप्त करने का एक सशक्त कार्यक्रम बन गया है। पिछले दिनों कोझिकोड न्यायालय में एक मुस्लिम युवक ने बयान दिया था कि उसने 42 हिन्दू लड़कियों से 'प्यार' किया और उसके बदले में उसे मौलवियों की ओर से प्रति लड़की एक लाख रूपये मिले। कहने का अभिप्राय यह है कि राज्य में लव जिहाद ऐसी निर्दयता पर उतर आया है। किन्तु राज्य सरकार इस संबंध में कोई ठोस कार्रवाई नहीं करना चाहती। केरल उच्च न्यायालय ने भी पिछले दिनों अपने एक निर्णय में कहा था कि लव जेहाद के माध्यम से मतान्तरण के जो प्रयास हो रहे हैं, उन्हें रोकने के लिए राज्य सरकार शीघ्र कानून बनाए।

केरल सरकार से हमारी मांग है कि सबरीमला विकास हेतु 200 एकड़ जंगल की जमीन आबंटित करे ताकि सबरीमला को पेरियार टाइगर रिजर्व से

# भारत के विरुद्ध चीनी आक्रामकता को पराजित करने का आह्वान

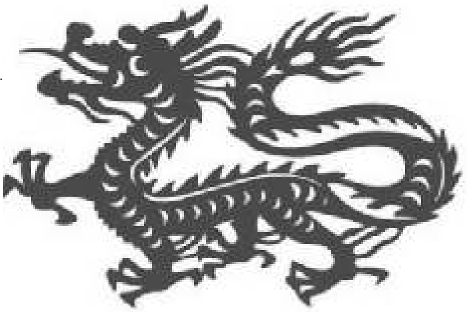

विश्व हिन्दू परिषद के प्रन्यासी मण्डल की बैठक में उपस्थित हम सब प्रतिनिधि सर्वसम्मति से भारत की सार्वभौम सम्प्रभुता के विरुद्ध चीन द्वारा किये जा रहे आक्रामक कार्रवाइयों की निंदा करते हैं। भारत ही नहीं बल्कि दक्षिण, दक्षिण–पूर्व एवं पूर्व एशियाई देशों के लिये संकट उत्पन्न हो गया है। चीन को यदि रोका नहीं गया तो सम्पूर्ण एशिया में संघर्ष छिड़ सकता है।

**चीन निम्नलिखित बिन्दुओं पर दोषी सिद्ध होता है–**

भारत की सम्प्रभुता का बार–बार उल्लंघन कर नियंत्रण रेखा, भारत –तिब्बत सीमा, लद्दाख क्षेत्र व भारत के अभिन्न अंग अरुणाचल प्रदेश में चीनी सेना का निरन्तर अतिक्रमण करना।

भारत के अभिन्न अंग अरुणाचल प्रदेश के संबंध में चीन द्वारा गलत दावेदारी करना।

चीन द्वारा 1962 के युद्ध में जबरन हथियायी गई भारत की 38,000 वर्ग कि. मी. भूमि को खाली करने से इंकार करना।

भारत के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में अलगाववादी गतिविधियों का अवैधानिक रूप से समर्थन करना।

नेपाल को अपने चंगुल में लेने वाले माओवादियों के हिन्दू विरोधी व भारत विरोधी गतिविधियों का समर्थन करना।

आतंकवादी देश पाकिस्तान के हिन्दू विरोधी व भारत विरोधी अनेकों कार्यों तथा पाकिस्तान के दक्षिण पूर्व एशिया में हिन्दू विरोधी कार्यों का समर्थन करना।

भारत–विरोध के लक्ष्य को लेकर पाकिस्तान द्वारा चलाये जा रहे परमाणु बम व प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण कार्य को लगातार समर्थन करना।

हिन्द महासागर में भारत को घेरने के लिये श्रीलंका एवं पाकिस्तान के तटीय क्षेत्रों में बन्दरगाहों का निर्माण कर अपनी सैनिक शक्ति का विस्तार एवं प्रभाव बढ़ाना।

भारतीय अर्थ व्यवस्था को नुकसान पहुंचाने के लिये निम्न स्तरीय वस्तुओं से भारतीय बाजारों को पाट देना।

ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपर तिब्बत में बांध बनाना तथा हिमालयी नदियों के जल के बहाव को चीन की ओर मोड़ना।

भारत सरकार के संवेदनशील सुरक्षा संस्थानों में लगे कम्प्यूटरों के ऊपर अपने आक्रमण (Cyber Warfare) के द्वारा नुकसान पहुंचाना।

दुराग्रही चीन द्वारा उत्पन्न समस्याओं से निपटने के लिये विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मंडल भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित कदम उठाने की मांग करता है–

भारत सरकार कठोरतापूर्वक चीन को यह बताये कि भारत की सार्वभौम सीमाओं का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

1962 में संसद द्वारा सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव का सम्मान करते हुये भारत सरकार शीघ्र चीन द्वारा हथियाये गये भू–भाग को पुनः वापस लेने का प्रभावी प्रयत्न करे।

चीनी वस्तुओं के भारत में आयात रोकने हेतु चीनी वस्तुओं पर कठोर कर एवं सीमा शुल्क लगाये।

हिन्द महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिये भारत सरकार को नौसेना, वायुसेना व थलसेना की शक्ति वृद्धि के साथ–साथ कूटनीतिक प्रयास तेज करने चाहिये।

नेपाल में भारत समर्थक ताकतों को मजबूत करे तथा चीन समर्थित माओवादियों का विरोध करे।

चीन द्वारा आतंकवादी देश पाकिस्तान एवं इस क्षेत्र में नुकसान देने वाली अन्य ताकतों का समर्थन देने के लिये अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसे अलग–थलग एवं बेनकाब करे।

चीन सरकार की खतरनाक गतिविधियों के प्रतिकार के लिए सुरक्षा व गुप्तचर व्यवस्था को मजबूत करे।

तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध बांधने तथा अन्य हिमालयी नदियों के जल के प्रवाह को मोड़ने से रोके।

**चीन समर्थक बुद्धिजीवी गुटों के आर्थिक तंत्र की छानबीन करे।**

**इसके अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मंडल चीन के द्वारा उत्पन्न किए जाने वाले खतरों के प्रतिकार हेतु सभी देश भक्त नागरिकों से आह्वान करती है कि निम्नलिखित कार्य करें–**

व्यवसायी तथा आयातकर्ता बन्धु चीन के निम्नस्तरीय वस्तुओं का व्यापार नहीं करें।

भारतीय उपभोक्ता चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करें तथा अपनी असीमित

**शेष पृष्ठ 18 पर**

अलग किया जा सके। इसके अलावा स्कूल पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के विपरीत जो भी परिवर्तन किये गये हैं उन्हें अविलम्ब बदला जाए और मुलापेरियार बांध पर अन्तरराज्यीय संबंधों की गरिमा के अनुकूल प्रधानमंत्री स्वयं हस्तक्षेप करें।

हिन्दुओं के समक्ष सबसे बड़ा खतरा इस समय इस्लामिक कट्टरवाद से है। केरल से अनेक आतंकवादियों का संबंध स्थापित हो चुका है। इसलिए सरकार को आतंकियों से सख्ती से निबटना चाहिए। यह राज्य सरकार के लिए अत्यंत शर्मनाक बात है कि जेलों में बंद आतंकवादी विलासितापूर्ण जीवन जी रहे हैं और उन्हें बाहर से भी ज्यादा आजादी जेल में मिली हुई है।

हिन्दू इस समय जो भी खतरा अथवा प्रताड़ना झेल रहे हैं, उसका एक महत्वपूर्ण कारण उनमें एकता का अभाव और उनकी कमजोरी भी है। इसलिए सम्पूर्ण हिन्दू समाज से हमारी अपील है कि वे अपनी इस दुर्दशा को गहरायी से समझें और अपनी एकजुटता के बल पर उसका मुकाबला करें। साथ ही केरल के हिन्दुओं को विशेष कदम उठाते हुए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छोटे परिवार की उनकी सोच से राज्य में कहीं उन्हीं के लिए जनसंख्या असंतुलन का खतरा पैदा न हो जाए।

**प्रस्तावक : के.वी. मदनन**
**अनुमोदक : बी.आर. बलरामन**

# मजहब के आधार पर आरक्षण देश तोड़ने का षडयंत्र

विश्व हिन्दू परिषद का वैश्विक प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति सर्वसम्मति से, यूपीए सरकार द्वारा सच्चर कमेटी की सिफारिशों की आड़ में, मजहब के आधार पर हिन्दू समाज की पिछड़ी जाति (OBC) के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण भाग में से 6 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति के लिए निर्धारित आरक्षण भाग में से भी कुछ भाग मुस्लिम समाज को देने का पुरजोर विरोध करती है।

मजहब आधारित आरक्षण भारतीय संविधान के विरूद्ध, भारत की एकता अखण्डता के लिए खतरा तथा देश में अलगाववाद की भावना जागृत करने वाला है। इसके क्रियान्वयन से देश के पुनः विभाजन का भी खतरा है। इसलिए प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबंध समिति का यह अधिवेशन इस आरक्षण का प्रबल विरोध करता है।

मुस्लिमों की पिछड़ी जातियों को पहले से ही हिन्दू पिछड़ा वर्ग (OBC) कोटे में आरक्षण प्राप्त है। मुस्लिम शिक्षा संस्थानों को सरकारी अनुदान भी मिलता है फिर भी ऐसे संस्थानों में हिन्दू SC/OBC युवकों के लिए आरक्षण का प्रावधान समाप्त कर दिया गया है। मुस्लिम एवं ईसाइयों के विकास के बहाने उनके तुष्टिकरण के लिये तीन–तीन आयोग बनाये गये हैं, फिर भी एक और आरक्षण देने की सिफारिश केवल वोट बैंक की राजनीति ही है। अतः संविधान की मूल भावना के विपरीत है।

संविधान सभा में परिचर्चा के दौरान डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर, पं. जवाहरलाल नेहरु, सरदार वल्लभभाई पटेल तथा श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी सहित सभी वरिष्ठ नेताओं ने मजहब आधारित आरक्षण की मांग का सर्वसम्मति से विरोध किया था, इतना ही नहीं प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने 27 जून, 1961 को देश के सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को एक पत्र लिखकर "मजहब आधारित आरक्षण" को नकार दिया था।

पिछड़ा वर्ग आरक्षण कोटे से मुसलमानों को आरक्षण देने से सम्पूर्ण हिन्दू समाज को भयंकर परिणाम भोगने पड़ेंगे। जैसे कि –

पिछड़ी जाति के कमजोर लोगों को बहुत भारी आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षणिक हानि होगी।

भविष्य में आबादी के अनुपात में मुस्लिमों और ईसाइयों के लिए आरक्षण की मांग उठाई जायेगी, जो देश को विभाजन के कगार पर खड़ा कर देगी।

मजहबी उन्माद, वर्ग संघर्ष एवं दंगा आदि की घटनाएं बढ़ेंगी।

पिछड़ी जाति के आर्थिक अनुदानों में से मुस्लिमों की हिस्सेदारी हो जाने के कारण पिछड़ा वर्ग और अधिक कंगाल एवं बेरोजगार हो जायेगा।

आर्थिक क्षेत्र में पिछड़े वर्ग की वर्तमान भागीदारी व्यवस्था और उद्योग व्यापार में पिछड़े वर्ग को मिलने वाली सहायता मुस्लिमों बटेगी।

अन्तरराष्ट्रीय मुस्लिम लाबी एवं ईसाई लाबी द्वारा भारत के हिन्दू युवकों को अपने–अपने मजहब में धर्मान्तरित करके अपनी जनसंख्या बढ़ाकर भारत को अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद का युद्धक्षेत्र बनाए जाने की संभावना बढ़ेगी और धर्मान्तरण को बढ़ावा मिलेगा।

यह उपवेशन महामहिम राष्ट्रपति महोदया जी से पुरजोर शब्दों में यह कहना चाहता है कि मुस्लिम मजहब में जाति व्यवस्था मान्य नहीं है तो फिर मजहबी जातीय आरक्षण नहीं मिलना चाहिए। महामहिम से अनुरोध है कि आप व्यापक राष्ट्रीय सामाजिक, संवैधानिक हितों को ध्यान में रखकर, इसमें हस्तक्षेप करते हुए वर्तमान यू.पी.ए. सरकार को संविधान एवं उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार मजहबी आरक्षण को निरस्त करने के लिये निर्देश दें।

आज ओबीसी का आरक्षण छीना जा रहा है, भविष्य में अनुसूचित जाति का आरक्षण छीनकर मुस्लिम व ईसाई को दिया जायेगा। अनुसूचित जनजाति का आरक्षण ईसाई को दे दिया गया है। अब भारत के संविधान में संशोधन करके मजहब के आधार पर मैरिट के हिन्दुओं का रोजगार छीनकर मुस्लिम व ईसाइयों को देने का षड्यंत्र को अंजाम देने की योजना है।

**हमारी मांग है कि –**

जस्टिस रंगनाथ मिश्र आयोग एवं सच्चर कमेटी की सिफारिशें जो सामाजिक सौहार्द्र को नष्ट करने वाली एवं अलगाववाद को बढ़ाने वाली है, तत्काल प्रभाव से रद्द कर दी जाय।

तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रान्तों में मुस्लिम समाज की गरीबी का बहाना बताकर वोट बैंक की घृणित नीति के अनुसार जो आरक्षण दिया गया है, उसको भी रद्द किया जाए।

ओबीसी के 27 प्रतिशत आरक्षण में से मुसलमानों को अलग 6 प्रतिशत आरक्षण न दिया जाय।

**इस्लाम में जाति नहीं है तो आज 27 प्रतिशत ओबीसी के आरक्षण में मुसलमानों की जो जातियां सम्मिलित हैं, उनको भी हटाया जाय।**

अनुसूचित जाति के आरक्षण से मुस्लिम व ईसाइयों को आरक्षण न दिया जाय।

अनुसूचित जनजाति के आरक्षण से ईसाइयों को हटाया जाय।

भारतीय संविधान ने मजहब के

**पृष्ठ 17 का शेषांश....**

क्रय शक्ति का प्रयोग भारतीय उत्पादकों को खरीदने में करें।

भारत के देशभक्त नागरिक अपना विरोध प्रदर्शित करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजी सामानों के बहिष्कार एवं होलिका दहन की तरह चीनी वस्तुओं का न केवल बहिष्कार करें अपितु दहन भी करें तथा राजनीतिक एवं सरकारी अधिकारियों को चीन समर्थक नीतियों के लिए उत्तरदायी ठहराएं।

**प्रस्तावक : नन्दलाल लोहिया,**
कोलकाता

**अनुमोदक : डॉ0 सुरेन्द्र जैन,**
रोहतक

# साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक-२०११ वापस लो; देश से क्षमा मांगो

विश्व हिन्दू परिषद की प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति की बैठक में उपस्थित हम सब प्रतिनिधि सर्वसम्मति से दिल्ली स्थित ज्वालामुखी मंदिर में कांची कामकोटि पीठ के पूज्य शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी की अध्यक्षता में आयोजित देशभर के सनातनी, जैन, बौद्ध, सिख एवं सभी पूज्य धर्माचार्यों के सम्मेलन में लिये गये निर्णय को शिरोधार्य करते हैं कि यह कानून (प्रस्तावित साम्प्रदायिक... विधेयक) देश को तोड़ने वाला, असंवैधानिक, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि को बांटने वाला, देश के हिन्दुओं को गुनहगार मानकर विश्व में सहिष्णु हिन्दू संस्कृति को बदनाम करने वाला, दंगाई, जेहादी, व्यवहार को प्रोत्साहित एवं हिंसा करने के बाद संरक्षण देने वाला है। देश के प्रशासन के ऊपर कानून के द्वारा नई असंवैधानिक व्यवस्था खड़ी करने वाला है। इसलिये इस प्रस्तावित बिल को तत्काल वापस लिया जाये। ऐसे कानून का प्रस्ताव करने के लिए उत्तरदायी व्यक्ति, देश एवं हिन्दू जनता से क्षमा मांगे।

**ऐसा कानून बनाने वाली नेशनल एडवाइजरी कमेटी को तत्काल भंग किया जाय।**

इस कानून से देश के मंदिर, संत, रामलीला, गणेशोत्सव तथा हिन्दुओं के अन्य धार्मिक कार्यक्रम व सामाजिक धार्मिक संस्थाएं हिन्दुओं के व्यापार, जेहादियों की दया पर निर्भर हो जायेंगे।

विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मण्डल देश के सभी संत, सभी सामाजिक धार्मिक बिरादरी की संस्थाओं का आह्वान करता है कि देशव्यापी जनजागरण और प्रबल जनान्दोलन करने के लिए तैयार रहें।

देश के हर कोने में जनजागरण एवं आन्दोलन हो और दिल्ली में भी प्रचण्ड प्रदर्शन की तैयारी करें।

विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मण्डल यह संकल्प व्यक्त करता है कि किसी भी कीमत पर इस हिन्दू विरोधी एवं गैरकानूनी प्रस्तावित विधेयक को कानून नहीं बनने देंगे और इसके लिये देश की जनता सर्वोच्च बलिदान के लिये तैयार रहे।

**प्रस्तावक : व्यंकटेश आबदेव, मुम्बई**
**अनुमोदक : नरपत सिंह शेखावत, जयपुर**

---

आधार पर आरक्षण को अस्वीकार किया है तो मजहब के आधार पर आरक्षण की सिफारिश एवं मांग करने वाले के विरूद्ध देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाय।

यह उपवेशन हिन्दू समाज का आह्वान करता है कि हिन्दू समाज में जन्मी अनुसूचित जाति, जनजाति, ओबीसी सभी मिलकर समस्त हिन्दू समाज की रोजी–रोटी छीनने वाली मुस्लिम/ईसाई वोट बैंक आधारित राजनीति को परास्त करें।

राष्ट्र की एकता अखण्डता में विश्वास रखने वाले सभी राजनीतिक दलों, सामाजिक संस्थाओं से विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मण्डल अनुरोध करता है कि वे दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में संगठित होकर इस सिफारिश को लागू किये जाने का पुरजोर विरोध कर, आन्दोलन में सक्रिय सहभागी बनें।

**प्रस्तावक : देवेश कुमार उपाध्याय**
**अनुमोदक : दिलीपभाई त्रिवेदी**

# नवीन घोषणाएँ

| | |
|---|---|
| जगन्नाथ जी साही | केन्द्रीय उपाध्यक्ष (झारखंड प्रान्त संघचालक हैं) |
| अरविन्द भाई ब्रह्मभट्ट | अ.भा. सेवा प्रमुख |
| आनन्द प्रकाश हरबोला | नेपाल, भूटान राष्ट्र संगठन मंत्री |
| दिनेश गोयल | विशेष सम्पर्क (कार्यालय दिल्ली) |
| खेम जी | केन्द्र दिल्ली होगा |
| सुभाष चौहान | केन्द्र दिल्ली होगा |
| परमानन्द मनोहर | केन्द्र इन्दौर होगा |
| सुधांशु पटनायक | बेंगलूर, चेन्नई क्षेत्र संगठन मंत्री |
| डॉ. श्याम गुप्ता | जम्मू कश्मीर प्रान्त मंत्री |
| हेमराज खजूरिया | जम्मू कश्मीर प्रान्त उपाध्यक्ष |
| स्वदेश जी गर्ग | हिमाचल प्रान्त अध्यक्ष |
| वसंत गगल | हिमाचल प्रान्त संरक्षक |
| दीपक गायकवाड | कोंकण प्रान्त मंत्री |
| संदीप तोंडापुरकर | कोंकण प्रान्त सहमंत्री |
| रणछोड भाई भारवाड | कर्णावती क्षेत्र मंत्री |
| कौशिक भाई मेहता | कर्णावती क्षेत्र कार्याध्यक्ष |
| अश्विन भाई पटेल | उ0 गुजरात प्रान्त मंत्री |
| दिनेश भाई नावडिया | द0 गुजरात प्रान्त अध्यक्ष |
| विजयभाई प्रणामी | द0 गुजरात संरक्षक |
| राजूभाई बसावा | द0 गुजरात संगठन मंत्री नहीं रहेंगे |
| जयपाल सैनी | मेरठ प्रान्त कार्याध्यक्ष |
| अशोक बिडलास | उत्तराखंड प्रान्त कार्याध्यक्ष |
| कृष्ण कुमार अग्रवाल | उत्तराखंड प्रान्त संरक्षक |
| कल्पना ताई अनवेकर | मुम्बई क्षेत्र मातृशक्ति संयोजिका |
| डॉ. चिन्मयदत्त | द0बंगाल प्रान्त मंत्री |
| अमीय सरका | द0 बंगाल प्रान्त उपाध्यक्ष |
| कृष्णदेव झा | उ0बिहार प्रान्त अध्यक्ष |
| शिवशंकर चौधरी | उ0 बिहार प्रान्त संरक्षक |
| रामलखन यादव | उ0 बिहार प्रान्त कार्याध्यक्ष |
| नन्द कुमार जी | द0बिहार प्रान्त मंत्री |
| सुरेश पाठक | प्रान्त सत्संग प्रमुख |
| गंगा प्रसाद यादव | झारखण्ड प्रांत मंत्री |
| रणधीर सिंह | झारखण्ड प्रान्त उपाध्यक्ष |
| शरद प्रधान | प0 उत्कल प्रान्त संगठन मंत्री |
| वसव राज | उ0+द0 कर्नाटक सत्संग प्रमुख +भारत संस्कृत परिषद |

**कुछ मातृशक्ति बहिनों का कार्यक्षेत्र बढायेंगे–**
डॉ0 मुक्ता मकानी, .श्रीमती किशोरी कोलेकर, व रसिला बेन

**दुर्गावाहिनी प्रवासी टोली**
सुश्री मालाबेन रावल – अ0भा0 दुर्गावाहिनी
सुश्री प्रज्ञा महाला – कोलकाता, पटना, गौहाटी क्षेत्र
सुश्री यज्ञा बेन– कर्णावती, जयपुर, मुम्बई क्षेत्र
सुश्री माला ठाकुर – भोपाल, लखनऊ, मेरठ क्षेत्र
सुश्री अनिता क्षेत्री – गोहाटी क्षेत्र
सुश्री रजनी ठुकराल– इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र

*उद्घाटन सत्र में विहिप–अंतरराष्ट्रीय महामंत्री डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उपवेशन में आयाम – प्रमुखों ने अपने–अपने आयाम का कार्यवृत्त प्रस्तुत किया। वीरेश्वर द्विवेदी द्वारा प्रेषित मीडिया विभाग का कार्यवृत्त भी प्रस्तुत किया गया।*

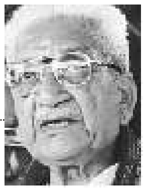

# जातियों के विखण्डन से मुक्त होने का हिन्दुओं से अशोकजी का आह्वान

ललितपुर (उ0प्र0), 7 दिसम्बर। ग्राम सौरा कलॉ में विराट धर्मसभा का आयोजन श्रीहनुमान मंदिर पर किया गया। धर्मसभा में मुख्य अतिथि विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष मा0 अशोक जी सिंहल रहे व अध्यक्षता म0म0 श्री संतोषदास शास्त्री, श्री सतुआ बाबा आश्रम वाराणसी ने की।

ग्राम मसौरा कलॉ पहुंचने पर अपार जनसमूह व महिलाओं ने मा0 अशोक सिंहल व म0म0 संतोषदास जी का स्वागत किया। विहिप काशी प्रांत के संगठन मंत्री मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि वर्तमान में विशेष कानून लाकर हिन्दुओं के विरुद्ध साजिश रची जा रही है। यदि जल्द से जल्द हिन्दुओं ने एकजुट होकर इस कानून का विरोध नहीं किया तो भारत वर्ष से हिन्दुओं का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। विश्व हिन्दू परिषद इस कानून के विरोध में है।

संत चिन्मयानंद बापूजी ने कहा कि संत समाज में कई परम्पराएं होती हैं। यह सदैव जनता के आत्मकल्याण के लिए कार्य करता है। समाज की पीड़ा में उसे अपनी पीड़ा दिखती है। संत सदैव संस्कृति की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। इसलिए संतों का सम्मान करना हमारा परम कर्त्तव्य है। संतों के कारण ही हिन्दू धर्म इतने संकटों के बाद भी अपनी विजय ध्वजा फहरा रहा है। आज भी कई ताकतें लोभ के बल पर हिन्दू धमार्वलंबियों के धर्म परिवर्तन की साजिश रच रही हैं। इन ताकतों से मुकाबले के लिए हमें एकजुट होना होगा।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए विहिप के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी सिंहल ने कहा कि देश को इस्लाम से सबसे बड़ा खतरा है। यदि हिन्दुओं ने एकजुट होकर ऐसी ताकतों का विरोध नहीं किया तो अगले 5 वर्ष में भारत में इस्लाम का राज कायम हो सकता है। लगभग 4 लाख मदरसों में तालिबान को तैयार किया जा रहा है जिसका उद्देश्य हिन्दुओं को नष्ट करना है। इसके अलावा ईसाई मिशनरीज 42000 करोड़ के बल पर हिन्दुओं का परिवर्तन कर रहे हैं। आज हिन्दुओं के देश में हिन्दुओं पर ही खतरे के बादल मण्डरा रहे हैं। जिस भारत पर सदियों से हिन्दुओं का अधिकार रहा है, उसी हिन्दू देश में यदि जल्द से जल्द जातियों के विखण्डन से मुक्त होकर हिन्दू एकजुट न हुए तो इसके उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

म0म0 संतोषदास शास्त्री ने कहा कि भगवत् साधना से बड़ी कोई साधना नहीं है, आत्मसाधना करने वाले भगवत साधना करते रहते हैं। बुन्देलखण्ड से जो चिंगारी उठेगी, वह सम्पूर्ण प्रदेश में जायेगी।

प्रस्तुति : राहुल शुक्ल
नई बस्ती, ललितपुर (उ0प्र0)

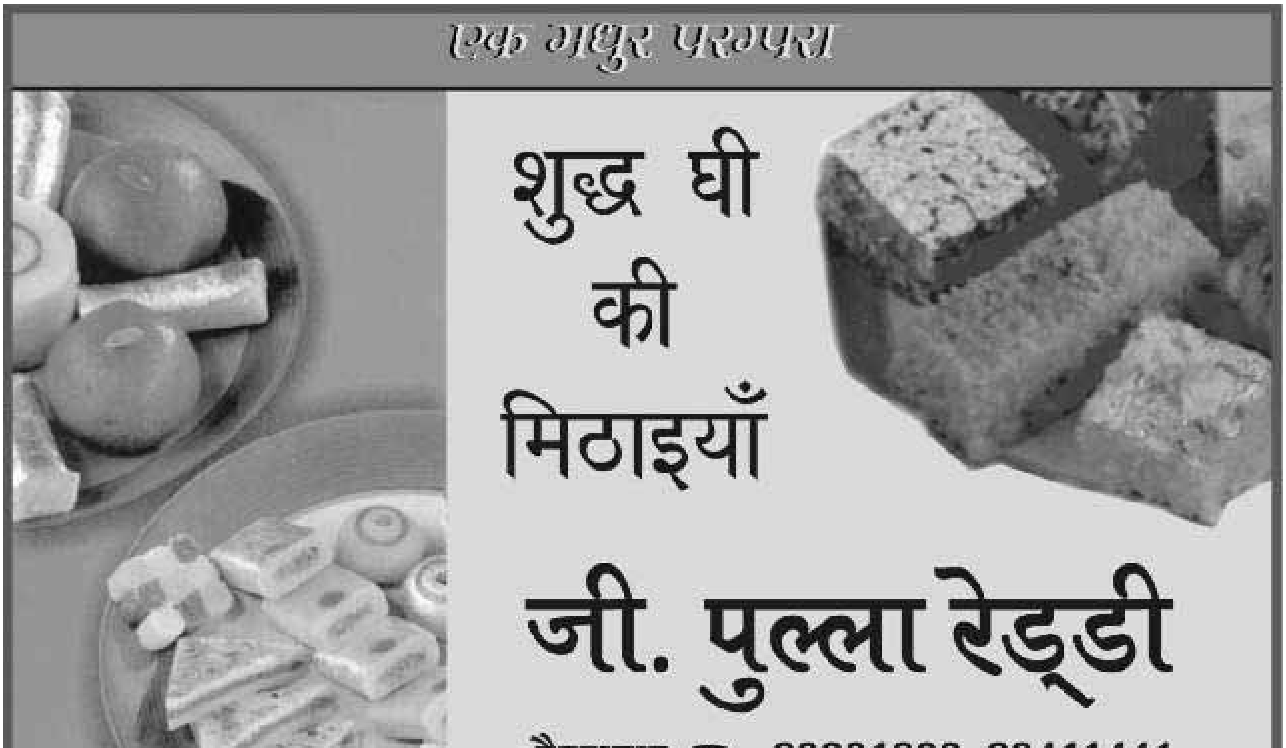

# राजनीति के शुद्धिकरण द्वारा देश की सभी समस्याओं का निराकरण सम्भव

अयोध्या, 6 दिसम्बर। "वोट बैंक की कुत्सित राजनीति ही श्रीरामकाज में बाधक है। वोट बैंक की राजनीति का शुद्धिकरण करके ही राष्ट्र की सभी समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है।"

उक्त उद्गार श्रीरामजन्मभूमि न्यास कार्याध्यक्ष व मणिरामदास छावनी के महंत नृत्यगोपालदास जी महाराज ने छः दिसम्बर के अवसर पर आयोजित धर्म जागृति सम्मेलन में अध्यक्षीय

उद्बोधन में व्यक्त किए।

धर्म जाग्रति सम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर परमहंस दासजी महाराज के उत्तराधिकारी व न्यास सदस्य महंत सुरेशदास व सनकादिक आश्रम के महंत कन्हैयादास रामायणी ने संयुक्त रूप से किया। नृत्यगोपालदासजी महाराज ने कहा कि जनसंख्या वृद्धि से भारत में असंतुलन का खतरा पैदा हो गया है। जनसंख्या से ही अगर देश सुरक्षित रह सकता है तो हिन्दुओं को इस पर विचार करने की आवश्यकता है। अब किसी भी कीमत पर हम एक और पाकिस्तान का निर्माण नहीं होने देंगे। हम दो, हमारे दो से अब काम चलनेवाला नहीं। उन्होंने 'मूलमंत्र–गर्व से कहो 'हम हिन्दू हैं', का उद्घोष करने की प्रेरणा दी।

रंगमहल के महंत रामशरणदास जी महाराज ने कहा कि श्रीराम जन्मभूमि पर राम मंदिर नहीं, अपितु राष्ट्र का मंदिर बन रहा है।

बजरंग दल के प्रांत संयोजक राकेश वर्मा ने कहा कि अयोध्या ने सदैव असत्य पर विजय प्राप्त किया है। यह भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि है। इसे हम विदेशी संस्कृति के अनुयायी कट्टरपंथियों के अपवित्र हाथों में नहीं जाने देंगे। श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के साथ ही अन्य बलात्चिह्नों को भी समाप्त करना होगा।

कार्यक्रम को म0म0 प्रेमशंकरदास, महंत कृष्णाचार्य, म0रामावतारदास, म0रामकृष्णदास, म0राममोहनदास, म0तुलसीदास, म0अवधबिहारीदास, म0 राममिलनदास, म0 रामकृपालदास, म0 गोबिन्ददास ने भी सम्बोधित किया।

**अयोध्या, 27 नवम्बर।** विहिप–बजरंग दल के संयुक्त तत्वावधान में वासुदेवघाट स्थित हनुमानबाग प्रांगण में आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में विहिप–अन्तरराष्ट्रीय महामंत्री डॉ0 प्रवीणभाई तोगड़िया ने धर्मनिरपेक्षता की ओट में वोट बैंक की राजनीति पर करारे प्रहार करते हुए कहा कि 82 फीसदी हिन्दुओं की उपेक्षा कर 18 फीसदी वोट बैंक की साजिश में राम मंदिर का निर्माण अटका हुआ है। यदि मंदिर निर्माण की बाधाएं दूर नहीं हुईं तो पुनः दिल्ली कूच का आह्वान किया जा सकता है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मणिरामदास छावनी के महंत कमलनयन दास शास्त्री ने वर्तमान परिस्थितियों में हिन्दू समाज को जागरुक होने का आह्वान किया। संचालन विहिप के विभाग संगठन मंत्री राजेश सिंह ने करते हुए नगर अध्यक्ष पद की जिम्मेवारी शचीन्द्र सिंह को सौंपी। विहिप महानगर संयोजक महंत ब्रजमोहन दास, बजरंग दल महानगर संयोजक राजीव कुमार दास, महंत सुरेश दास, महंत कन्हैयादास, रामायणी, महंत मानसदास शास्त्री, महंत प्रियाशरण, महंत कृष्ण कुमारदास भी उपस्थिति रहे।

**कुचेरा बाजार** स्थित दुखना देवी इण्टर कॉलेज के प्रांगण में आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन में डॉ0 तोगड़िया ने कहा कि समूचे विश्व के पूर्वज एक हैं। जब हम सब एक हैं तो हमारा धर्म भी एक है, जाति भी एक है और हम सभी हिन्दू हैं।

विशिष्ट अतिथि विहिप के संयुक्त महामंत्री चम्पतराय ने कहा कि जब देश की सीमा ही सुरक्षित नहीं है तो राष्ट्र जिंदा कैसे माना जा सकता है ? उन्होंने कानून सबके लिए समान रूप से लागू किए जाने की बात कही। महंत कन्हैयादास ने कहा कि भारत की सभ्यता व संस्कृति मिटाने वालों को संसद में घुसने नहीं दिया जायेगा। सम्मेलन को जिलाध्यक्ष वी0बी0 सिंह ने भी सम्बोधित किया।

## *गुरुकुल परम्परा को पुनर्जीवित करने की जरूरत : डॉ. तोगड़िया*

अयोध्या, 27 नवम्बर। विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय महामंत्री डॉ0 प्रवीणभाई तोगड़िया ने कहा कि आज वेदों का संरक्षण करते हुए गुरुकुल परंपरा को पुनर्जीवित किए जाने की जरूरत है। ईश्वर ने स्वयं वेदमंत्रों की रचना की है। मानव जीवन और सृष्टि में परिवर्तन करने वाला वेद ही है। डॉ0 तोगड़िया कारसेवकपुरम् में चल रहे क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन के दूसरे दिन के सत्र को मुख्यवक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो0 कृष्ण कुमार मिश्र ने कहा कि वेद राष्ट्र के नवोत्थान का मार्ग प्रशस्त करने वाला धर्मग्रन्थ है, जिसके अंदर सत्य का भंडार समाहित है। हमारे ऋषि–मुनियों ने वेद की ऋचाओं को संकलित और संरक्षित कर रखा था। भारत के चरमोत्कर्ष का मूल कारण वेद है। सत्र को प्रो0 हरिप्रसाद पांडेय गुजरात, डॉ0 नंदिता शास्त्री, प्राचार्य पाणिकला, महाविद्यालय वाराणसी, डॉ0 चिरंजीव शर्मा प्रयाग, डॉ0 वागीश दिनकर मेरठ व आचार्य हनुमान प्रसाद नौटियाल ने भी अपने विचार व्यक्त कर वेद के संवर्द्धन के लिए लोगों को संकल्प दिलाया।

# श्री राम जन्म भूमि पर भव्य मंदिर निर्माण का संकल्प

नई दिल्ली, 6 दिसम्बर। अयोध्या स्थित भगवान श्री राम के जन्म स्थल पर खड़े बाबरी नामक कलंक को सदा के लिए समाप्त करने की 19वीं वर्षगांठ को बजरंग दल ने आनंद के साथ मनाया। दिल्ली में प्रभातफेरियां, भजन–कीर्तन, हवन, वाहन रैली व महा–चालीसा के रूप में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

विहिप के प्रवक्ता प्रकाश शर्मा ने कहा कि भगवान श्रीराम की जन्मस्थली पर भव्य मंदिर के निर्माण हेतु हम सब संकल्पबद्ध हैं। वक्ताओं ने कहा कि राजनेता हिन्दूद्रोही मानसिकता से बाज आएं। बजरंग दल के कार्यकर्ता दिल्ली में अनेक स्थानों पर एकत्र हुए तथा राम मंदिर के लिए संकल्प व्यक्त किया। दिल्ली में चारों ओर बजरंग दल की वाहन रैलियों का जोर रहा। पूर्वी दिल्ली के गांधी नगर से, पश्चिमी दिल्ली के एम ब्लाक मंगोलपुरी चौक से, उत्तरी दिल्ली के तिलक नगर से तथा दक्षिणी दिल्ली के बदरपुर से चार विशाल वाहन रैली निकालकर महाचालीसा का पाठ भी किया गया। बजरंग दल के प्रान्त संयोजक शैलेन्द्र जायसवाल व सह संयोजक शिव कुमार ने रैली का नेतृत्त्व किया। ivhpmedia@gmail-com

**शाजापुर (म0प्र0), 6 दिसम्बर।** विश्व हिन्दू परिषद एवं अन्य हिन्दूवादी संगठनों के तत्वावधान में स्थानीय आजाद चौक स्थित मंदिर पर शाम महाआरती की गई। उपस्थित जनसमुदाय द्वारा आकाश में भगवा पताकाएं लहराकर शौर्य दिवस की महत्ता को भी प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय सहमंत्री परमानन्द मनोहर व विभाग संगठन मंत्री देवीसिंह सौंधिया, संघ के विभाग संघचालक नारायणप्रसाद पाण्डे, सहित बड़ी संख्या में हिन्दुत्व समर्थक जनसमुदाय उपस्थित था। rahuljn465@gmail.com

**पंजाब**

बटिण्ठा, 6 दिसम्बर। विश्व हिन्दू परिषद की युवा इकाई बजरंग दल द्वारा विभिन्न बाजारों से रैली निकाल कर फायर ब्रिगेड चौक में समाप्त किया। बजरंग दल के महानगर संयोजक संदीप अग्रवाल ने कहा कि 1528 ई0 से श्रीराम जन्मभूमि पर बाबर के जुल्मों का प्रतीक बाबरी ढांचे को हिन्दू शक्ति ने जागृत होकर गिराकर शौर्य की मिशाल पैदा की है। पटियाला में भी शौर्य दिवस मनाया गया।

vhpbajrangdalbti@gmail.com

**उ0प्र0** के हापुड़ में फरीदनगर पिलखुआ व हापुड़ नगर में अनेक स्थानों पर शौर्य दिवस मनाया गया। 11 बार हनुमान चालीसा पाठ व घरों की देहरी–मंदिर में दीप जलाकर श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के बलिदानियों को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। लगभग पाँच सौ से ज्यादा लोगों ने प्रत्यक्ष भागीदारी की।

– गौरव राघव, जि0सं0 बजरंग दल

फतेहपुर सीकरी, 6 दिसम्बर। जिला संयोजक जगमोहन चाहर व नगर संयोजक मोनू बंसल के नेतृत्व में फतेहपुर सीकरी

(आगरा में संतोष नगर स्थित हनुमान मंदिर पर 1008 दीप जलाकर हनुमान चालीसा का पाठ कर संकल्प लिया कि राम जन्मभूमि का बंटवारा नहीं होने देंगे। mr.gargfts@gmail.com

## विश्व कल्याण हिन्दू जीवन मूल्यों से ही संभव

**–चम्पत राय**

हरिद्वार, 20 नवम्बर। हरिद्वार के भूपतवाला स्थित निष्काम सेवा ट्रस्ट में विहिप दिल्ली के कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय अभ्यास वर्ग को सम्बोधित करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री चम्पत राय ने कहा कि विश्व की सभी समस्याओं का समाधान हिन्दू जीवन मूल्यों में निहित है। चाहे व्यक्ति विकास व उसके कल्याण की बात हो या पर्यावरण की, नारी सम्मान का विषय हो या लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा, समाजवाद को बढ़ावा देना हो या धर्मनिरपेक्ष समाज की रचना, ये सब हिन्दू जीवनमूल्यों के द्वारा ही सम्भव है।

उन्होंने कहा कि हिन्दू जीवन मूल्यों के अन्तर्गत ही धरती को मां और उस पर रहने वाले हर मानव को भाई–बहिन के रूप में माना गया है। बसुधैव कुटुम्बमकम् अर्थात् पूरा विश्व हमारा परिवार है और इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है ऐसा किसी अन्य धर्म में नहीं माना गया है। नारी को माता की संज्ञा व वृक्ष के साथ पुत्रवत व्यवहार हिन्दू धर्म की ही महानता है।

देश की राजधानी दिल्ली के विहिप–बजरंग दल व उससे जुडे आयामों के लगभग 150 पदाधिकारियों के प्रान्तीय अभ्यास वर्ग का हरिद्वार में समापन हो गया। विश्व हिन्दू परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री कैलाश चन्द्र, प्रान्त अध्यक्ष स्वदेश पाल गुप्ता, महामंत्री सत्येन्द्र मोहन, संगठन मंत्री करुणा प्रकाश सहित अनेक वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

ivhpmedia@gmail.com

# प्रस्तावित साम्प्रदायिक...विधेयक हिन्दू समाज को बांटने की साजिश

– दिनेशचन्द्र

विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल का राष्ट्र रक्षक युवा सम्मेलन ऊधमसिंह नगर जिले के रूद्रपुर गाँधी पार्क मैदान में आयोजित किया गया। विहिप के संगठन महामंत्री दिनेशचन्द्र ने साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक–2011 का विरोध करते हुए कहा कि इस बिल को बनाने वाले तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता राष्ट्रीय सलाहकार परिषद की मुखिया श्रीमती सोनिया गांधी, सैयद शहाबुद्दीन जैसे मुस्लिम, जान दयाल जैसे ईसाई, तीस्ता सीतलवाड़ जैसे कथित धर्मनिरपेक्ष नेता हैं। इस विधेयक में सबसे खतरनाक पहलू यह है कि इसमें भारत की सम्पूर्ण आबादी को दो भागों में बॉट दिया गया है। एक भाग को समूह कहा गया है दूसरे भाग को अन्य कहा गया है। समूह का अर्थ धार्मिक एवं भाषाई अल्पसंख्यक तथा अनुसूचित जाति, जनजाति के व्यक्ति इसके अतिरिक्त देश की सम्पूर्ण आबादी अन्य है। इसके आधार पर अनुसूचित जाति एवं जनजाति का नाम जोड़ना धोखा है। हिन्दू समाज को बांटने की साजिश है। इस विधेयक मे कहीं पर भी कोई साम्प्रदायिक दंगा होता है हिन्दू ही उसका दोषी माना जायेगा। यह विधेयक उन स्थानों पर लागू नहीं होगा जहॉ मुस्लिम और ईसाइयों की आबादी ज्यादा है।

देवेश उपाध्याय, क्षेत्रीय मंत्री ने कहा कि आज सम्पूर्ण देश के अन्दर बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, गोहत्या, धर्मान्तरण जैसे प्रमुख देश को दहलाने वाले विषय व्याप्त हैं। इन सभी का यदि समाधान करना है तो विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को भारत के सवा छः लाख गांवों में से सवा दो लाख गांवों में सशक्त संगठन की इकाई खड़ी करना अति आवश्यक है। तभी इन सारी समस्याओं का समाधान हो पायेगा।

**आचार्य म०म० स्वामी यतीन्द्रानन्द गिरि महाराज** ने कहा कि जब तक इस दुनिया से पाकिस्तान जैसे देश में पनप रहे आतंकवादियों की शरणस्थली को साहस के साथ समाप्त नहीं किया जायेगा तब तक देशविरोधी घटनायें होती रहेंगी। इस देश को दिल्ली में बैठी सरकार से भी खतरा व्याप्त है। हम सब हिन्दू समाज को मिलकर इसका मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कार्यक्रम में दीपक बिष्ट, विशिष्ट अतिथि मन्नू पांडेय, कार्यक्रम अध्यक्ष गुलशन छाबड़ा जैसे वरिष्ठ समाजसेवी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बजरंग दल के प्रांत संयोजक रंदीप सिंह पोखरिया ने किया। विहिप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री महावीर, प्रांत संगठन मंत्री ऋषि कण्डवाल, संभाग संगठन मंत्री सुभाष जोशी, प्रान्त कार्यकारी अध्यक्ष कृष्ण कुमार अग्रवाल, दुर्गावाहिनी की प्रान्त संयोजिका सावित्री चन्द्र, कुमायूँ मंत्री डॉ0 आर0के0 महाजन, विहिप के जिला उपाध्यक्ष पूर्ण सिंह नेगी, जिला मंत्री सुधीर बंसल सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

प्रस्तुति : हरीश जोशी
प्रचार प्रमुख
vijay.almora@gmail.com

## स्वस्त्ययन समारोह में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री सम्मानित

हरिद्वार, 2 दिसम्बर। दक्षेश्वर महादेव परिसर में हरिद्वार के पूज्य धर्माचार्य ने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री भुवनचन्द्र खण्डूरी का स्वस्त्ययन समारोह आयोजित कर उन्हें धर्मदण्ड सौंपा और शुभाशीष दिया। संतों के आशीर्वचनों से अभिभूत मुख्यमंत्री ने कहा कि भ्रष्टाचार देश की प्रमुख समस्या है। जनता के दुःख दर्द का मूल कारण भ्रष्टाचार है। यह देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। अपनी सरकार द्वारा पारित लोकायुक्त विधेयक की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हम इस बिल से भ्रष्टाचार कम करने में सफल हुए तो इससे विकास के लिए अच्छा वातावरण मिलेगा। हमारा देश ज्ञान–विज्ञान व संस्कार के क्षेत्र में विश्वगुरु माना जाता है और सौभाग्य से उत्तराखण्ड इसका सरताज है।

विश्व हिन्दू परिषद के संगठन महामंत्री दिनेशचन्द्र ने पूज्य संतों से आग्रह किया कि संत देश की चिंता करें और नेता आत्मचिंतन करें तभी राजनीति की दशा व दिशा सुधर सकती है।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री भुवनचंद्र खण्डूरी ने बाला दक्षेश्वर महादेव रुद्राभिषेक किया तथा प्रदेश के विकास व सुख शांति की प्रार्थना कर संतों से आशीर्वाद लिया। संतों ने उन्हें रुद्राक्ष माला व धर्मदण्ड प्रदान किया। इस अवसर पर स्वामी चिदानंद मुनि, डॉ0 श्यामसुन्दर दास, संत रघुवीर दास, स्वामी गिरधर नारायण, महंत रामानंद पुरी, विहिप के अ0भा0 धर्माचार्य संपर्क प्रमुख अशोक तिवारी, जिलाध्यक्ष वीरेन्द्र कीर्तिपाल सहित परिषद व बजरंग के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संपूर्ण आयोजन को श्री निर्वाणी अखाड़े के सचिव स्वामी रविन्द्रपुरी महाराज ने आयोजित किया।

**प्रस्तुति : अमित शर्मा**
**मीडिया प्रभारी, विहिप उत्तराखण्ड**

## पुतला दहन

**बस्तर (छत्तीसगढ़)**, 4 दिसम्बर। साम्प्रदायिक व लक्षित हिंसा अधिनियम –2011 का जयस्तंभ चौक में पुतला दहन किया गया जिसमें शताधिक बजरंगी मौजूद थे।

**– डॉ0 आशुतोष पाण्डे**
**प्रांत सह–संयोजक, बजरंग दल**

# कर्नाटक में 'लव जेहाद' का चढ़ता बुखार ; जांच करायेगी प्रान्तीय सरकार

**बंगलौरः** 'लव जेहाद' की आड़ में हिन्दू युवतियों को फंसाने की घटनाओं पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कर्नाटक सरकार ने 16 दिसम्बर को घोषणा की कि वह इस मामले की जांच कराएगी।

उल्लेखनीय है कि 'लव जेहाद' के नाम पर मुस्लिम युवकों द्वारा बहुत ही सुनियोजित षडयंत्र के तहत भोली–भाली गैर मुस्लिम युवतियों को प्यार के जाल में फंसाकर बाद में उनके मतान्तरण तथा जबरन निकाह की घटनाएं सामने आ रही हैं।

राज्य के भाजपा विधायकों ने विधान सभा में सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए कहा कि तटीय कर्नाटक के हिस्सों में इस प्रकार की घटनाएं बहुत तेजी से बढ़ी हैं। भाजपा विधायकों की इस मांग पर टिप्पणी करते हुए विधि एवं संसदीय कार्यमंत्री एस. सुरेश कुमार ने कहा कि, "यह गंभीर मसला है और इसे गंभीरता से लिया जाएगा। इस मसले को राजनीतिक दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। इस संबंध में उन लड़कियों के मां–बाप की अत्यंत तंगहाली पर भी ध्यान देना होगा, जिन्हें मुस्लिम युवक अपने प्यार के जाल में फंसा रहे हैं। यह निश्चित रूप से एक गंभीर मसला है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।"

उन्होंने कहा कि वे इस संबंध में गृहमंत्री आर. अशोक से बात कर उनसे निवेदन करेंगे कि वे इसकी जांच कराएं।

भाजपा विधायक श्रीमती मल्लिका प्रसाद ने इस मामले को सदन में उठाते हुए कहा कि राज्य के **दक्षिण कर्नाटक जिले से इस साल जून से नवम्बर के बीच 84 गैर मुस्लिम युवतियां गायब हुई और उनमें से 69 का ही पता लग पाया।** शेष युवतियों का क्या हुआ अभी तक किसी को पता नहीं है। **लव जेहाद के नाम पर युवतियों को प्यार के जाल में फंसाकर बेचा जा रहा है।**

विधान सभा उपाध्यक्ष एन.योगिश भट्ट (भाजपा) ने कहा कि **इस साल उडुपी जिले से 64 युवतियां गायब हुई और उनमें से सिर्फ 42 का ही पता चल पाया है।** उन्होंने आरोप लगाया कि ड्रग माफिया भी इस रैकेट में शामिल है और जानकारी मिली है कि लव जेहाद के चंगुल में फंस जाने के बाद कुछ युवतियों ने आत्महत्या भी कर ली। जो लोग पुलिस को युवतियों के मतान्तरण और जबरन निकाह की जानकारी देते हैं पुलिस इस संबंध में कार्रवाई करने की बजाए उल्टे उन्हें ही धमकाती है। उन्होंने सरकार से आग्रह किया वह इस संबंध में ठोस कार्रवाई करे। (पीटीआई)

## धर्मान्तरण कराती महिला गिरफ्तार

नव. के उत्तरार्द्ध में कर्नाटक के कोडगु जिला के कुशल नगर गांव के बाहरी इलाके में एक घर में स्थानीय लोगों को ईसाइयत में शामिल करने के लिए दबाव बनाया जा रहा है, इन आरोपों के मद्देनजर पुलिस ने छापा डाल कर एक महिला को गिरफ्तार किया।

ज्ञात हो कि एक ईसाई महिला श्रीमती जानकी अम्मा जो, बेतेल मंत्रालय चर्च की एक सदस्य है, की गिरफ्तारी पर **'ईसाई उत्पीड़न अद्यतन भारत' ब्लाग** पर धर्मान्तरण कराती, रंगे हाथों पकड़ी गई महिला के पक्ष में कर्नाटक सरकार व हिन्दू संगठनों की निन्दा की गई है। भारतीय ईसाइयों की ग्लोबल परिषद (जी. सी. आई. सी.) ने ऐसी 41 घटनाओं को अतिरंजित रूप से प्रदर्शित किया है।

*कश्मीर में पास्टर के खिलाफ शरीया अदालत की कार्रवाई पर भीगी बिल्ली बनी 'भारतीय' ईसाइयों की ग्लोबल परिषद का ऐसा रवैया क्या हैरतअंगेज नहीं है?–सं.*

विहिप–संस्थापक व प्रबंध समिति–सदस्य टी. लक्ष्मीनारायण का आंध्र में निधन हो गया।

**गतात्मा को 'हिन्दू विश्व' द्वारा विनम्र श्रद्धांजलि!**

## प्राचीन मंदिर को बचाने के लिए मदुरै में धरना

**तमिलनाडु** के पसिलमपट्टी तालुका के 20 से अधिक ग्रामों के ग्रामवासियों ने पिछले दिनों मदुरै कलेक्ट्रेट के बाहर धरना देकर कलक्टर श्याम के उस आदेश को निरस्त करने की मांग की, जिसमें कलक्टर ने पसिलमपट्टी के निकट पिचमपट्टी में एक प्राचीन हिन्दू मंदिर को ध्वस्त करने का निर्देश दिया था। कलक्टर से मिलने तथा डी.आर.ओ. के साथ ग्रामीणों की तीखी बहस करने के बाद कलक्टर के आदेश पर अस्थायी रोक लगायी गयी। किन्तु ग्रामीणों का कहना था कि कलक्टर के आदेश को तुरन्त प्रभाव से वापस लिया जाए। विहिप जिला अध्यक्ष आर. चिन्मय सोमसुन्दरम ने कलेक्ट्रेट के बाहर प्रतीक्षा कर रहे ग्रामीणों को जब यह जानकारी दी कि कलक्टर के आदेश पर अमल फिलहाल रोक दिया गया है, तभी ग्रामीण वहां से हटे।

**प्रस्तुति : विहिप, मदुरै**

सिरसा (हरियाणा) में युवाओं को त्रिशूल-दीक्षा प्रदान करते डॉ. प्रवीण तोगड़िया, (चित्र में दाएं से दूसरे) कैलाश सिंहल (क्षे. संगठन मंत्री)

रुद्रपुर (उत्तराखंड) में राष्ट्र रक्षक युवा सम्मेलन को सम्बोधित करते दिनेश चन्द्र (संगठन महामंत्री - विहिप)

मलकाजगिरि (आन्ध्र) में 4 दिस.को आयोजित भगवद्गीता कंठस्थ प्रतियोगिता में सहभागी छात्र-छात्राएं

हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में आयोजित दिल्ली प्रान्त -अभ्यास वर्ग में प्रतिभागियों को सम्बोधित करते विहिप - के. संयुक्त महामंत्री चम्पतराय

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

DL-SW-1/4031/2012-14
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
मुद्रण- तिथि : 28.12.11
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

न्यूजर्सी-अमेरिका में आयोजित विहिप अमेरिका की प्रबंध समिति की बैठक में सहभागी प्रतिनिधि

ललितपुर (उ.प्र.) में आयोजित धर्म सभा में श्री अशोकजी सिंहल, पूज्य संतवृन्द तथा श्रद्धालु जनता

शाजापुर (म.प्र.) में शौर्य दिवस पर विहिप द्वारा आयोजित महाआरती में परमानंद मनोहर (के. सहमंत्री-विहिप) सहित उपस्थित जनसमुदाय

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्‌श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.–9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज